जन्नत से कम नहीं कौसानी

कौसानी में प्रकृति वह सब देती है जो आम शहरी को चाहिए, कौसानी की ऊंची पहाड़ी से पर्यटकों को हिमालय, उनके सामने खड़ा नजर आता है, ढलानों पर हरे भरे खेत, बाग बगीचे, चाय बागान पर्यटकों की सारी थकान अपने सौंदर्य से दूर कर देते हैं।

कमल कपूर
वरिष्ठ पत्रकार

बर्फ से ढकी चोटियों, चाय के बागानों की हरियाली से सजे अंतहीन मैदान और पहाड़ियों पर लगातार घूमते सफेद बादलों के मनमोहक दृश्य को देखना है तो उत्तराखंड के कौसानी जरूर आइए। उत्तराखंड के सबसे अच्छे पर्यटन स्थलों में से कौसानी एक है। यहां प्रकृति अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करती है, चहचहाते परिंदे दिन होने के साथ सूरज डूबने तक अनमोल शांति का जश्न मनाते हैं। बागेश्वर जिले में स्थित कौसानी देवभूमि का शानदार हिस्सा बेहद खूबसूरत डेस्टीनेशन है। कौसानी की शांत वादियों में बैजनाथ मंदिर और सोमनाथ मंदिर जैसे आस्था के केंद्र सैलानियों को आकर्षित करते हैं। क्योंकि ये विशाल रुद्रधारी झरनों और गुफाओं के पास है। जो तीर्थयात्रियों सहित पर्यटकों के लिए रुचि का एक और केंद्र हैं। प्रकृति प्रेमी कौसानी में चाय बागानों की भी यात्रा कर सकते हैं। 208 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैले चाय बागानों को देखकर मन हो जाता है। घूमने के लिए अन्य सर्वोत्तम स्थानों में सुमित्रानंदन पंत गैलरी है, जो कविताओं में रुचि रखने वालों को शांतिपूर्ण माहौल देती है। चाहे प्रकृति प्रेमी हो या रोमांटिक एकांत की तलाश में हनीमून मनाने वाला जोड़ा हो, या फिर रोमांच का शौकीन हो, कौसानी अपने आकर्षणों के कारण सभी के लिए बेहतरीन डेस्टीनेशन है। कौसानी में चाय बागानों के साथ पर्वतों की ऊंची चोटियां, घने जंगल, देवदार के पेड़ और सुहाना मौसम पर्यटकों को आकर्षित करता है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर कौसानी में आपको त्रिशूल, नंदादेवी और पंचचुली जैसी हिमालय की चोटियां भी साफ-साफ देखने को मिल जाएंगी। छुट्टियों में प्राकृतिक सौंदर्य और सुहाने मौसम का लुत्फ उठाना हो तो इस छोटे से हिल स्टेशन की सैर पर आ सकते हैं।

भारत का स्विट्जरलैंड

कौसानी को पहले 'वालना' के नाम से पहचाना जाता था, लेकिन कौसानी नाम कैसे और कब पड़ा इसका कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता। 1929 में महात्मा गांधी ने अनासक्ति योग पर अपना काम करने के लिए इस गांव में डेरा डाला और काफी दिनों तक यहां रुके थे। इस पहाड़ी क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को देखते हुए महात्मा गांधी ने इसे 'भारत का स्विट्जरलैंड' कहा था। अल्मोड़ा से करीब 55 किलोमीटर उत्तर में कौसानी हिमालय की पिंगनाथ चोटी पर बसा है, जहां से बर्फ से ढकी हिमालय की पर्वत माला ऊंची-ऊंची चोटियों के भव्य दर्शन होते हैं। कौशिकी (कोसी) और गोमती गंगा नदी के बीच बसे कौसानी के बारे में प्रचलित है की यह गांव राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को भी पसंद आ गया था। यहां के खूबसूरत प्रकृति के नजारे, खेल और धार्मिक स्थल पर्यटकों को खास तौर पर अपनी ओर आकर्षित करते हैं। समुद्र के तल से लगभग 6000 फीट की ऊंचाई पर बसा कौसानी अपनी नेसर्गिक सुंदरता के लिए देश और दुनिया में मशहूर है। यह पर्वतीय बस्ती चीड़ के घने पेड़ों के बीच बसी है। यहां से सोमेश्वर, गरुड़ और बैजनाथ की सुंदर कत्यूरी घाटियों का अद्भुत नजारा देखने को मिलता है। पहले कौसानी अल्मोड़ा जिले का हिस्सा था जिसे वलना के नाम से भी जाना जाता था। उस समय अल्मोड़ा जिला कत्यूरी के राजा बैचलदेव के अधिकार क्षेत्र में आता था। कहते हैं कि बाद में राजा ने इसका काफी बड़ा हिस्सा गुजरात के एक ब्राह्मण श्रीचंद तिवारी को दे दिया था, जो अब इतिहास की बातें हैं। वर्तमान के कौसानी बागेश्वर जिले का प्रसिद्ध पर्वतीय पर्यटक केंद्र है।

थकान और तनाव हो जाएगा दूर

किसी भी छोटे पर्वतीय डेस्टीनेशन की तरह ही कौसानी में भी पर्यटक मैदानों की गर्मी, नगरों की भागमभाग व प्रदूषण से त्रस्त होकर कुछ समय शांत, शीतल व स्वच्छ वातावरण में बिताने आते हैं। कौसानी में प्रकृति वह सब देती है जो किसी आम शहरी को प्रकृति से चाहिए, ऊंची पहाड़ी पर स्थित कौसानी से पर्यटकों को विशाल पर्वतराज हिमालय, उनके सामने खड़ा नजर आता है। पहाड़ी ढलानों पर हरे भरे खेत-मैदान, बाग बगीचे, चाय बागान और घने जंगल पर्यटकों की सारी थकान, तनाव और परेशानियों को अपने सौंदर्य से दूर कर देते हैं। कौसानी की खूबसूरती ने पर्यटकों को यहां आने के लिए आकर्षित किया है। साथ ही महात्मा गांधी से जुड़ी ऐतिहासिकता ने भी बड़ी-बड़ी हस्तियों को यहां आने पर मजबूर किया। यहां आने वालों में प्रसिद्ध व्यक्तियों में गांधी जी के अलावा पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी, सोनिया गांधी, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डॉ. कर्ण सिंह और प्रसिद्ध पत्रकार अरुण शौरी आदि प्रमुख हैं।

- **1929 में महात्मा गांधी ने अनासक्ति योग पर अपना काम करने के लिए इस गांव में डेरा डाला और काफी दिनों तक यहां रुके थे, इस पहाड़ी क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को देखते हुए महात्मा गांधी ने इसे 'भारत का स्विट्जरलैंड' कहा था।**
- **कौसानी की चाय बहुत ही खुशबुदार और स्वादिष्ट होती है, बड़ी मात्रा में यहां की चाय विदेशों को भेजी जाती है, क्योंकि विदेशों में इसकी काफी मांग है, आम चाय की तुलना में यहां की चाय की कीमत बेहतर गुणवत्ता के कारण ज्यादा है।**

डॉ. कर्ण सिंह और अरुण शौरी को यह जगह इतनी पसंद आई कि वो समय निकाल कर यहां आते रहते थे। कौसानी का प्राकृतिक सौंदर्य ही इतना आकर्षक है जो इन बड़ी हस्तियों को भी दूर-दूर से इस छोटे से दूरस्थ पहाड़ी स्थल पर आने को विवश कर देता है। हिंदी छायावादी परंपरा के प्रतिनिधि सुमित्रानंदन पंत की जन्म स्थली कौसानी ही है जहां पर कवियत्री ने अपना बचपन व्यतीत किया था। पंत जी यहां जिस घर में पैदा हुई थी, अब उस घर को संग्रहालय बना दिया गया है। सुमित्रानंदन पंत जिस स्कूल में पढ़ती थी, वह आज भी उसी तरह चल रहा है। कवियत्री सुमित्रानंदन पंत की जन्मस्थली होने के साथ ही यह कई कलाकारों व साहित्यकारों का प्रमुख भ्रमण व विश्राम स्थल रहा है। प्रख्यात साहित्यकार निर्मल वर्मा को कौसानी की शांत वादियां बहुत पसंद थी और उन्होंने कई बार यहां की यात्राएं की थी। प्रसिद्ध कवि और साहित्यकार पंडित नरेंद्र शर्मा ने कौसानी का परिचय इन पक्तियों से किया है...

यह नई धरा, आकाश नया, यह नया लोक मिल गया मुझे।
थी आत्मा जिसके हित अशांत, वह शांत लोक मिल गया मुझे।

कौसानी की सुंदरता को देख कर गांधी जी ने कहा था कि इन पहाड़ों में प्राकृतिक सौंदर्य की मेहमान नवाजी के आगे मानव द्वारा किया गया कोई भी सत्कार फीका है। मैं आश्चर्य के साथ सोचता हूं कि इन पर्वतों के सौंदर्य और जलवायु से बढ़ कर किसी और जगह का होना तो दूर, इनकी बराबरी भी संसार का कोई सौंदर्य स्थल नहीं कर सकता। अल्मोड़ा के पहाड़ों में करीब तीन सप्ताह बिताने के बाद मैं बहुत ज्यादा आश्चर्यचकित हूं कि हमारे यहां के लोग बेहतर स्वास्थ्य की चाह में यूरोप क्यों जाते हैं। कौसानी के प्राकृतिक सौंदर्य की मिसाल इस तथ्य से समझी जा सकती है कि वर्ष 1929 में जब महात्मा गांधी भारत भ्रमण पर निकले थे तब अपनी थकान मिटाने के लिए कौसानी के चाय बागान के मालिक के अतिथि गृह में दो दिन विश्राम किया था। यहां आने के बाद कौसानी के उस पार हिममंडित पर्वत मालाओं पर पड़ती सूर्य की स्वर्णमयी किरणों को देखकर गांधी जी इतना मुग्ध हो गए कि अपने दो दिन के प्रवास को भूलकर लगातार चौदह दिन तक यहां रुके रहे थे। अपने इस प्रवास के दौरान ही उन्होंने गीता पर आधारित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अनासक्ति योग' का प्रारंभिक चरण पूरा किया था।

सुमित्रानंदन पंत की जन्मस्थली

कौसानी को महान साहित्यकारों की जन्म भूमि के रूप में भी जाना जाता है। कौसानी का एक और साहित्यिक परिचय यह भी है कि कौसानी कवियत्री सुमित्रानंदन पंत की जन्मस्थली है। महाकवि सुमित्रानंदन पंत को श्रद्धांजलि स्वरूप समर्पित इस स्थल पर महाकवि की मूर्ति स्थापित है। 1990 में स्थापित इस मूर्ति का अनावरण वयोवृद्ध साहित्यकार तथा इतिहासवेत्ता पंडित नित्यनंद मिश्र ने उनके जन्म दिवस 20 मई को किया था। लेकिन मूर्ति की स्थापना और उत्तरखंड राज्य बनने के बाद खुले आसमान के नीचे मूर्ति का होना स्थानीय साहित्यकारों को अखरता है इसके उपर कैनोपी लगाकर

कौसानी में बैजनाथ और सोमनाथ मंदिर सैलानियों को आकर्षित करते हैं, क्योंकि ये विशाल रुद्रधारी झरनों और गुफाओं के पास है, जो तीर्थयात्रियों सहित पर्यटकों के लिए रुचि का एक और केंद्र हैं, प्रकृति प्रेमी कौसानी में चाय बागानों की भी सैर कर सकते हैं।

उसे वर्षा आदि से बचाने का प्रबंध किया जाना चाहिए। महाकवि का पैत्रक ग्राम भी यहां से कुछ ही दूरी पर ही है, परंतु वह आज भी अन्य गांवों की तरह एक अनजाना साधारण पहाड़ी गांव है। संग्रहालय में महाकवि द्वारा उपयोग में लाई गई दैनिक वस्तुएं यथा शॉल, दीपक, पुस्तकों की अलमारी तथा महाकवि को समर्पित कुछ सम्मान-पत्र एवं पुस्तकें तथा हस्तलिपि सुरक्षित हैं। वैसे कौसानी सिर्फ साहित्य के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि कौसानी की गिनती कुमाऊं के सबसे सुंदर पर्यटन स्थलों में होती है।

चाय के बागान

कौसानी और आसपास के क्षेत्र में चाय के बागान भी ऐसी हरियाली का आनंद देते हैं, मानो ईश्वर ने हरा कालीन बिछा दिया हो। चाय बागानों में घूमने के साथ फैक्ट्रियों में चाय को तैयार होते देख सकते हैं। कौसानी में एक चाय का बागान भी है, जो यहां से लगभग सात किलोमीटर की दूरी पर बैजनाथ की तरफ है। यहां की चाय बहुत ही खुशबुदार और स्वादिष्ट होती है। बड़ी मात्रा में यहां की चाय विदेशों को भेजी जाती है, जिसकी विदेशों में काफी मांग है। आम चाय की तुलना में यहां की चाय की कीमत उसकी बेहतर गुणवत्ता के कारण बहुत ज्यादा है।

लक्ष्मी आश्रम

कौसानी में लक्ष्मी आश्रम (सरला देवी आश्रम) भी है। जो कौसानी के बस स्टेशन से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर है। यह आश्रम एक अंग्रेज औरत कैथरीन मेरी हेल्वमन ने बनवाया था जो लंदन की मूल निवासी थी। वह गांधी जी से प्रभावित थी जब 1948 में वह भारत भ्रमण आई तो गांधी जी से प्रभावित होकर भारत में ही रहने का निर्णय किया जिसके लिए कौसानी को उन्होंने अपनी कर्म स्थली के रूप में चुना। यहां उन्होंने लक्ष्मी आश्रम के नाम से एक बोर्डिंग स्कूल चलाया जिस में लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सिलाई, कढ़ाई, बुनाई आदि सिखाया जाता है। लक्ष्मी आश्रम में श्री कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव विशेष महत्व का है और उस दिन यहां पर मेले का आयोजन किया जाता है।

पिनाकेश्वर व सोमेश्वर मंदिर

कौसानी से लगभग आठ किलोमीटर की दूरी पर कुमाऊं की पिनाथ पहाड़ी पर पिनाकेश्वर महादेव का प्रसिद्ध प्राचीन शिव मंदिर है जो इस क्षेत्र के लोगों की आस्था का केंद्र है। साथ ही यह स्थान कौसानी आने वाले पर्यटकों के लिए एक बेहतरीन पिकनिक स्पॉट भी है। ऊंचे पहाड़ों पर ट्रैकिंग के शौकीनों के लिए यह बहुत उपयुक्त स्थान है। पिनाकेश्वर के पास ही गोपालकोट, हरिया तथा बूढ़ा पिनाकेश्वर भी है, जो प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है। कौसानी से ही लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर सोमेश्वर मंदिर है जो शिव के मंदिर के लिए जाना जाता है। कत्युरी शैली में बना यह शिव मंदिर देखने में बहुत ही आकर्षक लगता है। बताया जाता है कि इस मंदिर का निर्माण कुमाऊं के चंद साम्राज्य के संस्थापक राजा सोमचंद ने करवाया था। यह भी कहा जाता है कि इस जगह का नामकरण राजा सोम और भगवान महेश्वर के नामों को मिला कर किया गया है। कौसानी में ठहरने के लिए भी कई अच्छे विकल्प हैं। दिसंबर से फरवरी के बीच कौसानी में खूब बर्फ गिरती है जिससे मौसम काफी ठंडा रहता है। वैसे पर्यटक यहां पूरे साल आते हैं। मार्च-अप्रैल और फिर सितंबर-अक्टूबर में आसमान खुला होता है, जिनमें हिमालय के शानदार नजारों का खूबसूरती से दीदार किया जा सकता है। आज कौसानी ने विश्व पर्यटन के क्षेत्र में एक खास स्थान बना लिया है और यहां आने वाले पर्यटक फिर से यहां आने का सपना लेकर वापस जाते हैं। आप जब कभी काम के दवाब से थक जाएं और रिलैक्स होने का मूड बने, तो कौसानी की सैर कर लें। यहां की कुदरती खूबसूरती आपका तनाव पल भर में दूर कर देगी।

समीक्षा

जितनी मिट्टी उतना सोना

समुद्रतल से 4000 से 15000 फीट ऊंचाई पर अधिकांश बसासत शौका अथवा रं (रंङ) समाज की है, हमारे देश में रं (रंङ) समाज की बसासत मुख्यतः पिथौरागढ़ जिले की धारचूला तहसील के ब्यांस, तल्ला दारमा, मल्ला दारमा और चौंदास पट्टी में है।

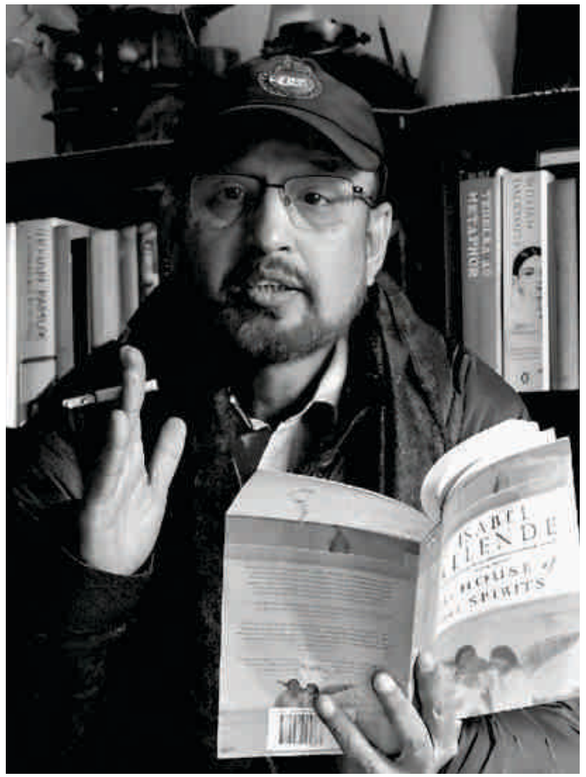

अरुण कुकसाल
चामी पौड़ी गढ़वाल

बा हर का कमरा उत्सुक और प्रसन्न चेहरों से अट जाता है। कोई अपने घर से बनी च्यक्ती (स्थानीय शराब) लाया है, कोई कुछ मीठा पकवान। दुनिया-जहान की बातें होती हैं। अचानक एक महिला उन्हीं दिनों लोकप्रिय हुआ नेपाली गीत गाना शुरू करती है...'तिमी पारि त्यो गाउं मा, म वारि यो गाउं मा, आंखा तर्दै तिम्लाई नै हेरि राखे को, नशा लागिस...।' एक-एक करके सभी उसकी आवाज से अपनी आवाज मिलाते हैं और कोई नाचना शरू कर देता है। कमर और हाथों की शालीन लय और गति रं नृत्य की खासियत होती है। ऐसा लगता है इस सभ्यता का हर व्यक्ति इस खास नृत्य को सीखकर ही पैदा होता है। ऑस्ट्रियाई मानवशास्त्री डॉ. सबीने लीडर और यायावर लेखक अशोक पांडे 1994 से 2003 तक यानी 9 वर्ष के अंतराल में लगभग 4 साल तक रं (शौका) जनजाति पर शोध कार्य के लिए उच्च हिमालयी क्षेत्र की चौंदास, दारमा, व्यॉस और जोहार घाटियों की यात्राओं पर रहे। अशोक पांडे स्वीकारते हैं कि 'इन यात्राओं ने मेरे जीवन को आकार देने में बड़ी भूमिका निभाई है'। इन शोध यात्राओं के एक हिस्से (जुलाई से अक्टूबर, 1996) को अशोक पांडे ने 'जितनी मिट्टी उतना सोना' यात्रा-पुस्तक में दर्ज किया है। स्थानीय जय सिंह इस यात्रा में उनका हमसफर रहा है। पिथौरागढ़ जिला, नेपाल और तिब्बत से सटे काली, गौरी और धौली नदी क्षेत्र समुद्रतल से 4000 से 15000 फीट ऊंचाई में अधिकांश बसासत शौका अथवा रं (रंङ) समाज की है। हमारे देश में रं (रंङ) समाज की बसासत मुख्यतः पिथौरागढ़ जिले की धारचूला तहसील के ब्यांस, तल्ला दारमा, मल्ला दारमा और चौंदास पट्टी में है।

उच्च-हिमालयी क्षेत्र में ब्यांस घाटी काली नदी, दारमा घाटी धौली नदी और चौंदास घाटी काली और धौली नदी के बीच में पसरा भू-भाग है। रं भाषा में ब्यूंखू (ब्यांस), दर्मा (दारमा) और बंबा (चौंदास) के सम्मलित क्षेत्र के 42 गांवों में 'च्येपी सै सुमसा मा' याने 'चौदह देवता और तीस देवियों' की भूमि रं संस्कृति और सभ्यता से रंगी है। हिमालय शिखरों की छत्र-छाया में रं समाज के घर व गांव हैं। हिमालय उनके लिए चुनौती नहीं, रहवासी है। हिमालय में रह कर वे प्रकृति की विकटता का ही नहीं, उसकी विराटता को भी महसूस करते हैं। इस विकटता और विराटता में दोनों का सह अस्तित्व और वैभव विकसित हुआ है। स्वाभाविक है कि हिमालय के प्रति रं समाज का आकर्षण पारिवारिक आत्मीयता से ओत-प्रोत है। यही कारण है कि भारत, तिब्बत-चीन और नेपाल की सीमाओं से घिरे इस क्षेत्र में आज भी देशों की परिधि से बेफिक्र रं समाज समग्रता और जीवंतता में जीता है। अपनी शानदार संस्कृति पर बेहद गर्व करने वाले तीन देशों भारत, नेपाल और तिब्बत के रं रहवासियों को विएना से आई शोधार्थी सबीने लीडर 'द पीपल ऑफ श्री कंट्रीज' कहती है। रं समाज का आधार, अतीत और आयाम घुमक्कड़ी रहा है। पर इनकी हिमालयी यात्राएं घुमक्कड़ी भर नहीं हैं। सच यह है कि, ये रं समाजी लोगों की अपने आधारभूत जीवन और जीविका के लिए की गई जरूरतें और जिज्ञासाएं हैं। देश-दुनिया में तेजी से हो रहे शैक्षिक, सामाजिक और राजनीतिक बदलावों ने हिमालय के सीमांत समाजों की जीवन शैली को भी प्रभावित किया है। इस बदलाव को स्वीकारते हुए अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक मौलिकता को बरकरार एवं जीवंत रखने के कारण रं समाज के पैतृक जीवन मूल्य उन्हें विशिष्ट बनाए हुए है। रं घाटी के गांवों में आज भी स्थानीय संस्कृति और उद्यमशीलता का बोलबाला है। इसका प्रभाव एवं प्रवाह उनके विचार, व्यवहार, उद्यम और लेखन में आना स्वाभाविक है।

देश-दुनिया में तेजी से हो रहे शैक्षिक, सामाजिक व राजनीतिक बदलावों ने हिमालय के सीमांत समाजों की जीवन शैली को भी प्रभावित किया है, इन बदलाव को स्वीकारते हुए सामाजिक और सांस्कृतिक मौलिकता को जीवंत रखने के कारण रं समाज के पैतृक जीवन मूल्य उन्हें विशिष्ट बनाते हैं।

जीवन की मात्र एक महत्वपूर्ण घटना भी अपने गमग्या (पशु) की पीठ पर लिख कर छोड़ देता तो इससे जो साहित्य विकसित होता, वह सामुदायिक साहस, संयम, संघर्ष और सफलता की दृष्टि से पूरे विश्व में अद्धितीय होता' ऐसा 'यादें' किताब की भूमिका में डॉ. आरएस टोलिया ने उल्लेख किया है। बिट्रिश कालीन डिप्टी कमिश्नर चार्ल्स ए. शेरिंग ने 1906 में लंदन से प्रकाशित किताब 'वेस्टर्न तिब्बत एंड ब्रिटिश बॉर्डरलैंड' और 'नोट्स ऑन भोटियाज ऑफ कुमाऊं-गढ़वाल' में रं घाटी एवं समाज पर व्यापक विचार लिखे हैं। लॉन्गस्टाफ, हेनरी रैमजे, शिप्टन, डब्लूजे वेव, ट्रैल, बैटन, ईटी एटकिंसन, स्मिथ आदि के रं समाज पर शोधपरख विवरण हैं। इसी तरह, बद्रीदत्त पांडे का 'कुमाऊं का इतिहास', डॉ. शिवप्रसाद डबराल के 'उत्तराखंड के भोटांतिक', रतन सिंह रायपा-'शौका सीमावर्ती जनजाति सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन', डॉ.आरएस टोलिया का 'बिट्रिश कुमाऊं-गढ़वाल', प्रो.शेखर पाठक का 'अतुल्य कैलास-मानसरोवर एक बहुसांस्कृतिक, धार्मिक क्षेत्र के सीमापारीय अंतर्संबंध' और प्रो. शेखर पाठक एवं प्रो. ललित पंत की 'कालापानी और लिपूलेख-एक पड़ताल' प्रकाशित किताबें रं समाज पर महत्वपूर्ण संदर्भ साहित्य हैं। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए चर्चित लेखक और घुमक्कड़ अशोक पांडे की 'जितनी मिट्टी उतना सोना' शोध यात्रा किताब 34 अध्यायों में रं समाज के विविध आयामों को जानने और समझने की दृष्टि लिए हिंद युग्म, प्रकाशन से वर्ष-2022 में प्रकाशित हुई है। ये यात्रा-पुस्तक उच्च-हिमालयी पारिस्थितिकीय में विकसित रं समाज के मन-मस्तिष्क में समाई विराटता और वैभव को महसूस कराने के साथ पाठकों को जीवनीय कष्टों से 'परे हट' कहने का साहस भी देती है।

मोटर मार्ग से पहले की यात्रा

विगत शताब्दी के आखिर दशक की ये यात्रा इन क्षेत्रों में मोटर मार्ग आने से पहले की है। लिहाजा इस यात्रा-वृतांत में सड़कों से आई कृतिमता से बचकर स्थानीय प्रकृति और समाज अपने मौलिक रूप में मुखरित एवं वर्णित है। काली, कुटी और धौली नदी-घाटी की वन्यता और वहां के लोगों के जीवन और जीवका का प्रवाह इसमें निर्बाध रूप से प्रवाहित है। 'धौलीगंगा का बहाव आक्रामक और शोरभरा है। वह भयाक्रांत कर देने वाले क्रोध के साथ बहती है। बड़े-बड़े पत्थर उसके बहाव में यूं बह रहे हैं जैसे कि वे गत्ते के बने हुए हों। नदी के उस तरफ की पहाड़ियां बेहद हरी हैं। मेरे भीतर फेदेरिको गार्सिया लोर्का गूंजने लगता है। 'वेदें, के ते कीयेरो वेदें, वेदें' (हरे, हरे कितना प्यार करता हूं तुझे ओ हरे) इस हरे लैंडस्केप के सौंदर्य को बिगाड़ते बहुत सारे पीले, भूरे भूस्खलन भी हैं।' सामान्यतः यात्रा-वृतांत आत्म-मुग्धता से ग्रसित होते हैं। अपना और क्षेत्र विशेष का कथित श्रेष्ठता बोध उनका मूल भाव बन जाता है। ये यात्रा-किताब इन व्याधियों से ग्रसित होने से बची है। इसमें स्थानीय प्रकृति और परिवेशीय समाज के प्रति आत्म-मुग्धता की जगह जमीनी हकीकत और उसके प्रति जज्बा है। यह रं समाज की समग्र जीवन-चर्या की मौलिकता भी है। लेखक ने संस्मरणों में अपने से ज्यादा अहमियत परिवेशीय समाज और पकृति को दी है। साथ ही क्षेत्र के पिछड़ेपन और भौगोलिक विकटता को कोसने के बजाय उसमें नई उद्यमीय जीवन संभावनाओं को तलाशने और उसे हासिल करने के प्रयासों को सार्वजनिक किया है। इस मायने में यह किताब अधिक आकर्षक, विशिष्ट और उपयोगी है। यह यात्रा-किताब रं समाज के अतीत को जानने, वर्तमान को समझने और भविष्य की दिशा इंगित कराती है। यह रं समाज के ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पक्षों और वर्तमान में उनकी चुनौतियों से रू-ब-रू कराने का जरिया बनी है।

रं समाज का नाम 'भोटिया' में दर्ज

यह किताब बताती है कि तिब्बती नाक-नक्श देखकर (संभवतः बिट्रिश कालीन डिप्टी कमिश्नर चार्ल्स ए. शेरिंग) सरकारी रिकार्ड में रं समाज का नाम 'भोटिया' दर्ज हो गया है। रं समाज के मन-मस्तिष्क में इसकी कसक आज भी है। क्योंकि इस ऐतिहासिक त्रुटि के कारण यह थोपी हुई पहचान आज भी प्रचलन में है। इस यात्रा-पुस्तक में उत्तराखंड के सीमांत क्षेत्र के परिदृश्य के साथ अतीत और वर्तमान में भारत, नेपाल, तिब्बत और चीन के आपसी रिश्तों और विवादों की पड़ताल है। समृद्ध जल-प्रवाह काली, गौरी और धौली नदी के बारे में तथ्यात्मक बातें हैं। ये किताब 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद उत्तराखंड के सीमांत क्षेत्रों में चीन-तिब्बत के साथ सदियों पूर्व के परंपरागत व्यापार के समाप्त होने के कारण आई आर्थिक एवं सांस्कृतिक त्रासदी को भी रेखांकित करती है। ज्ञातव्य है कि अतुल्य कैलास मानसरोवर मार्ग में स्थित यह संपूर्ण क्षेत्र 1962 के भारत-चीन युद्ध से पूर्व प्रसिद्ध व्यापारिक केंद्र की पहचान लिए हुए था। स्थानीय सीमावर्ती समाज अचानक आए इन बदलावों के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। इस नाते, भारत-चीन के बीच होने वाले युद्ध के बाद दोनों ओर के सीमावर्ती समाज के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रिश्तों पर पड़ी दरार के कुप्रभावों का मूल्यांकन इस किताब में है। इसके बावजूद आज भी, उच्च-हिमालयी क्षेत्र में पल्लवित रं समाज की सामाजिक अभिवृत्ति-हिम्मत और हौंसले से नई समृद्धता की ओर अग्रसर है। यायावरी और उद्यमशीलता की पैतृक विरासत को लिए रं (शौका) हिमालयी ज्ञान और हुनर का धनी समाज है। प्रसिद्ध इतिहासविद् डॉ. शिवप्रसाद डबराल ने 'उत्तराखंड के भोटांतिक' पुस्तक में लिखा कि 'यदि प्रत्येक शौका अपने संघर्षशील, व्यापारिक और घुमक्कड़ी

अशोक पांडे और सबीने रं समाज के जीवन के मर्म और दर्द को भी आत्मसात करते जाते हैं, रं समाज को वे केवल देखते और उनके साथ रहते भर नहीं हैं, वरन उनके सिरी-नमस्या (बेटा-बहू) बन कर जीना शुरु कर देते हैं, दो घुमक्कड़ों का यह मधुर मिलन आज के दुनियादारी जीवन में दुर्लभ सुखद संयोग है।

खतरों से गुजरती यात्रा

चौदांस, ब्यांस और दारमा क्षेत्र और समाज की संस्कृति, जीवन निर्वाह और वहां प्रवाहित काली, कुटी और धौली गंगा का परिचय कराते हुए धारचूला, तवाघाट, सोबला, दर, स्येला, नंगलिंग, बालिंग, सौन, दुग्तू, दांतूं, बोन, फिलम, तीदांग, बीदांग, सिन-ला, जौलिंगकौंग, कुटी, नाबी, गुंजी, रौंगकौंग, नपल्च्यू, गर्ब्यांग, छियालेख, बूंदी, मालपा, बिंदाकोटी, मांगती, पांगला, दंदौला, रुंग, सिरखा, सिरदंग, पांगू, ठाणीधार से पुनः तवाघाट और धारचूला की 5 माह की यह यात्रा रोमांचक ही नहीं इस संपूर्ण क्षेत्र को जानने-समझने के द्वार भी खोलती है। पर्वत, झील, बुग्याल, दर्रे, शिखर और ग्लेशियरों से गुजरती घनघोर जंगलों में स्थित उड्यार (गुफा) में बैठकर बारिश, तूफान और बर्फवारी को सहने का रोमांच लिए यह अदभुत यात्रा है-'मैं एक बिल्कुल दूसरा रास्ता लेता हूं और सेकेंडों के भीतर ग्लेशियर की तलहटी पर पहुंच जाता हूं। सबीने भी वहीं है और गुस्से भरी आंखों से मुझे देख रही है। अचानक मुझे गड़गड़ाहट सी सुनाई देती है और मैं जहां खड़ा था वहां से तेजी से भागता हुआ अपने साथ सबीने को घसीटता हुआ दूसरी जगह पहुंच जाता हूं। कुछ ही पलों में उस पिछली जगह पर ढेर सारे पत्थर गिरते हैं। वह और भी पगला जाती है।' सिनला दर्रे (समुद्रतल से 18,030 फीट की ऊंचाई) के आर-पार के दुर्गम अजपथों को एक-दूसरे के साथ खुद को खुद से हौंसला देकर कामयाब होने का किस्सा भी आपकी नजर हाजिर है...'साहब मैं नहीं जानता था कि इतनी मुश्किल होगी। मैं वापस जाना चाहता हूं। मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं, साहब।' वह फफक कर रोने लगता है। भाग्यवश सबीने काफी पीछे है और इस दृश्य को देखने के लिए सिर्फ जयसिंह ही मेरे साथ है।' मेरी समझ में नहीं आ रहा उससे क्या कहूं। अपने दिमाग में किसी उचित वाक्य की संरचना करता हुआ मैं उसके कंधे थपथपाता हूं। जयसिंह एकदम हक्का-बक्का है-मेरी तरह। 'देखो लाटू काकू, हम सबके अपने परिवार हैं। हम भी थक गए हैं और चिंतित हैं पर आप तो हमारे गाइड हैं। हम सब आप के ही तो भरोसे हैं। अगर आपने जाना है तो आपकी इच्छा है पर हम कहां जाएंगे? लाटू सबीने के थके हुए चेहरे पर दृढ़ इच्छाशक्ति देखता है-अचानक कोई चीज उसे प्रेरित करती है-वह उठता है और तीव्र गति से चलना शुरू कर देता है-आंसुओं को पोंछने की परवाह किए बगैर। लेखक का भोगा और लिखा उक्त विवरण हम पाठकों के लिए रोमांच और दुष्कर है। पर उच्च-हिमालयी निवासियों के लिए अपनी दिनचर्या में किसी एक दिन का सामान्य हिस्सा भर है।

वृद्धों का साहस

'हमें रास्ते का अगला छोर दिख रहा है, जिसके आगे सब साफ है। उसे पार करने का हम विचार कर ही रहे हैं कि सामने की तरफ के छोर पर कहीं से आ रही एक बूढ़ी स्थानीय महिला मलबे पर हमारी दिशा में चलना शुरू करती दिखाई देती है। उसके पैरों में रबड़ की चप्पलें हैं और पीठ पर बोझा। वह किसी तरह पांव टिकाती एक-एक कदम बढ़ा रही है, जो कभी एड़ियों तो कभी पिंडलियों तक मलबे में धंसे जा रहे हैं। हम थमी हुई सांसों से उसे देख रहे हैं। जयसिंह चीख़कर आवाज़ लगाता है...'आराम से काकी, डरना मत। धीरे-धीरे आओ।' तीन-चार मिनट की मशक्कत के बाद वह हमारे ठीक सामने है। वह बोझा नीचे रखती है, चप्पल उतारती है और पास में बह रहे साफ पानी के एक धारे पर पहले उन्हें फिर अपने पैरों को साफ करती है। जयसिंह उससे कुछ पूछता है, लेकिन वह जवाब नहीं देती। अपना काम पूरा करके वह चप्पल पहनती है, बोझा पीठ पर लादती है और धीमी रफ्तार से ऊपर लामारी की तरफ जाने वाले रास्ते पर चल देती है। जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसके लिए यह रोजमर्रा का काम है।' इन पंक्तियों को पढ़ते हुए मुझे अपने साथियों के साथ 10-15 अक्टूबर, 1990 में की गई सुंदरढुंगा ग्लेशियर यात्रा की याद आई, जब जातोली गांव के पास हमारे सामने ऐसा ही दृश्य उपस्थित हुआ था। यह किताब रं समाज की पथ-प्रदर्शक (रं भाषा में अमटीकर) रही जसुली बूढ़ी शौक्याणी (समुद्रतल से 11 हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित दांतू गांव की दानवीरा जसुली बूढ़ी शौक्याणी ने 1870 में तत्कालीन कुमांऊ कमिश्नर हेनरी रैमजे की सलाह पर अपने अकूत पैतृक धन को कुमांऊ-गढ़वाल, तिब्बत और नेपाल-प्रमुखतः कैलास-मानसरोवर यात्रा मार्ग में अनेकों धर्मशालाओं को बनाने के लिए दान कर दी थी।) तथा 1936 में स्थापित नारायण स्वामी आश्रम की कई वर्षों तक संचालिका रही गंगोत्री गर्ब्याल (समुद्रतल से 10500 फीट ऊंचाई पर स्थित ब्यांस घाटी के गर्ब्याल गांव की गंगोत्री गर्ब्याल दीदी ने इस सीमांत क्षेत्र में शिक्षा और सामाजिक सेवा की अलख जगाने में अग्रणी भूमिका निभाई थी।) की याद दिलाती है।

संक्षिप्त वैवाहिक अनुष्ठान

अशोक पांडे और सबीने की ये यात्राएं एक शोधार्थी के बतौर संपंन हुई हैं। वे इस दौरान रं समाज की परंपराओं, गीतों, कथाओं और गाथाओं को संकलित करते हैं। इनमें से कुछ का विवरण इस किताब में है। जिनमें प्रमुखता से प्रकृति मुखर है, मानव उसका एक अंश भर है। किस्से दर किस्से सुनते-सुनाते और उनको लिपिबद्ध करते हुए अशोक पांडे और सबीने रं समाज के जीवन के मर्म और दर्द को भी आत्मसात करते जाते हैं। रं समाज को वे केवल देखते और उनके साथ रहते भर नहीं हैं, वरन उनके सिरी-नमस्या (बेटा-बहू) बन कर जीना शुरू कर देते हैं। दो घुमक्कड़ों का यह मधुर मिलन आज के दुनियादारी जीवन में दुर्लभ सुखद संयोग है। 'यह मेरी मां की निशानी है। आज से तुम्हारी हुई।' सबीने संकोच करती रही पर जबरन उसे थमाते हुए वे बोले 'आप लोग मानो चाहे न मानो आज से मैंने तुम दोनों को अपना बेटा-बहू मान लिया। मतलब, सिरी नमस्या।' संभवतः दुनिया के इतिहास में इतना संक्षिप्त वैवाहिक अनुष्ठान कहीं न हुआ होगा। सनम काकू के फैसले पर मोहर लगाते हुए पुरोहित बनाकर लाए गए कॉमरेड धरम सिंह ने गिलास भर दिए। सुबह-सुबह दावत शुरू हो गई।' निःसंदेह, हिमालय प्रेमी घुमक्कड़ों और शोधार्थियों के लिए यह एक जरूरी यात्रा-किताब है। ●

उत्तरांचल दीप
पत्रिका

उत्तराखंड की तेजी से बढ़ती मैगजीन
चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने, नैनीताल रोड हल्द्वानी
देहरादून कार्यालय:-11 लिटन रोड देहरादून (उत्तराखंड)

सदस्यता फार्म

प्रबंधक
उत्तरांचल दीप
हल्द्वानी (नैनीताल)

मान्यवर,
मैं उत्तरांचल दीप पत्रिका की एक वर्ष की सदस्यता लेना चाहता हूं। पत्रिका का वार्षिक शुल्क रुपये 450 नकद, बैंक ड्राफ्ट,चेक संख्या..भेज रहा हूं। मुझे पत्रिका भिजवाने की व्यवस्था कराने का कष्ट करें। मेरा पता इस प्रकार है। चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट **उत्तरांचल दीप** के नाम से स्वीकार होगा।

सदस्य का नामः-

पिता अथवा पति का नामः-

डाक का पताः-

तहसीलः-

जिलाः-

मोबाइल नंबरः-

ई-मेलः-

यदि आपको लेखन में रूचि है तो आप लेख अथवा स्टोरी लिखकर उत्तरांचल दीप पत्रिका के संपादक को भेज सकते हैं। संपदकीय टीम द्वारा आपकी स्टोरी का चयन करने पर आपके लेख को उत्तरांचल दीप पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा। याद रखें कि स्टोरी अथवा लेख आपका मूल होना चाहिए। अच्छी स्टोरी व लेख को उत्तरांचल दीप पत्रिका द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा।

संपादक

भाषण नेताजी का

भाईयों और बहनों, मैं फिर कहूंगा कि हमारी पार्टी को सरकार बनाने का मौका दों, ताकि हम इन तमाम मंडराते चील-कऊओं की चुनौतियों का मुंहतोड़ जवाब दे सकें, क्योंकि सरकार बनाएं बिना हम कोई जवाब नहीं दे पाएंगे।

अतुल मिश्र
व्यंग्यकार, चंदौसी

देश के ऊपर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। भाषण वाले मंच पर मंडराते चील-कऊओं की ओर इशारा करते हुए नेताओं ने उस भीड़ को हकीकत से वाकिफ कराया, जो हर चुनाव में यह खौफनाक और डरावना भाषण सुनने की आदी हो चुकी थी। भीड़ पर जब इस महावाक्य का कोई असर होता हुआ नहीं दिखाई दिया और नेता को लगा कि भीड़ अब समझदार हो गई है, तो उसने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया...'किसी भी वक्त हम पर परमाणु हमला हो सकता है। इसलिए भाईयों और बहनों, मैं फिर कहूंगा कि हमारी पार्टी को सरकार बनाने का मौका दों, ताकि हम इन तमाम मंडराते चील-कऊओं की चुनौतियों का मुंहतोड़ जवाब दे सकें। क्योंकि सरकार बनाएं बिना हम कोई जवाब नहीं दे पाएंगे। लोगों ने नेता की बात को कुछ इस अंदाज से लिया, जैसे बारिश के दिनों में बूंदें टपकती हैं, वैसे ही परमाणु बम टपकेंगे और उसके बाद भाषण सुनने के लिए आसमान फिर से साफ हो जाएगा। जो लोग पानी पी-पीकर हमारे प्रधान सेवक को कमजोर बोलते हैं, मैं उनसे पूछता हूं कि वे लोग खुद मर्दाना ताकत की दवाएं क्यों खाते हैं? प्रधानमंत्री बनने का ख्वाब देखने वाले सत्ता से बेदखल एक नेता ने अपने भावी प्रधानमंत्री की कमजोरी और बाकी दलों की असलियत बयान की। मसलन हमें इस वक्त एकजुट होकर उस आतंकवाद से भी लड़ना है, जो हमारी विपक्षी पार्टी की सरकार के जमाने में पनपा था। इसे कुचलना हमारी पहली प्राथमिकता होगी और विपक्षी कुछ भी कहें, हम इसे कुचल कर ही दम लेंगे। ऐसे बयान देते वक्त कहीं खुद का दम न निकल जाए, इस गरज से नेता ने पानी का पूरा गिलास हलक में उतार लिया। गला तर करने के बाद नेती जी फिल चिल्लाए मुल्क को खतरा चारों तरफ से है और चारों तरफ सत्ता के भूखे भड़िये चुनाव लड़ रहे हैं, इसलिए यह फैसला अब आपको ही करना है कि अपना कीमती वोट आप किसे देंगे? नेता जी ने खुद की सत्ता पर कुंडली मारे बैठने की भूख की अहम वजह बताए बिना ही भीड़ को खतरनाक किस्म के तमाम किस्से सुनाकर खतरों से खबरदार किया। नेता जी बोले पांच साल पहले हमने अपनी जनता से जो वादे किए थे, वे अगले पांच वर्षो तक पूरे कर दिए जाएंगे, यह हमारा दावा भी है और वादा भी है। शुरू में कही जाने वाली बात से अपने भाषण को लपेट कर नेता जी उड़न खटोले में सवार हुए और दूसरी सभा में देश पर मंडराते खतरों के किस्से बांचने चले निकल गए। साथ में छोड़ गए हेलीकाप्टर के पंखों से उड़ती धूल के गुबार, जो भीड़ को नेताजी के तमाम खतरनाक इरादे से कम नहीं लग रहे थे।

मौसम और भविष्यवाणी

सरकार जब यह महसूस करने लगती है कि पब्लिक गर्मी के अलावा बिजली-कटौती और महंगाई जैसी अपने आप उत्पन्न होने वाली समस्याओं से ग्रस्त है, तो उसे खुश करने के लिए कुछ ऐसे विद्वान समझे जाने वाले विद्वानों से परामर्श करती है, जो मौसम विभाग के दफ्तरों में बैठकर जम्हाइयां ले रहे होते हैं। उनसे पूछा जाता है कि हर साल की तरह इस साल भी क्या देख रहे हैं...मौसम कैसा रहेगा? दफ्तर से जवाब मिलता है कि इस चुनावी सीजन में किसान नाम का वोटर सबसे ज्यादा खुश रहेगा, क्योंकि मूसलाधार बारिश होने के तमाम योग बन रहे हैं। इस साल के चुनावी सीजन में सिर्फ मूसल ना बरसकर लगातार मूसलाधार बारिश होने की भी 99 प्रतिशत संभावना है। एक प्रतिशत इसलिए छोड़ दी कि मानसून का मूड बदल गया और वो पड़ोसी मुल्क की तरफ निकल लिया तो फजीहत ना हो जाए, कि मौसम विभाग ने तो ऐसा कहा था वैसा कहा था और ये कैसा हो रहा है? मौसम विभाग के वैज्ञानिक और ज्योतिषाचार्य ही दो जीव है, जिनकी भविष्यवाणी सब देखते हैं और पढ़ते हैं, लेकिन यकीन नहीं करते हैं। वैसे दो प्रजाति के ये जीव दुनिया के वो जीव हैं जिनकी ईश्वर में पूरी आस्था होती है। यानी जो भविष्यवाणी ये दो जीव करेंगे भगवान वही करेंगे। ईश्वर साक्षात किसी को दिखते नहीं हैं, इसलिए यही दो प्रजाति के जीव भविष्यवाणी करके खुद को ईश्वर के काम में दखलअंदाजी करने वाला बताने की कोशिश करते हैं। अब भविष्यवाणी गलत हो भी जाए तो कोई चिंता नहीं इसके लिए भी जवाब हाजिर है 'ये तो जैसी प्रभु की इच्छा है!' इन दोनों जीवों की हालत कुछ ऐसी हो गई है कि हिन्दुस्तानी भविष्यवाणियों पर यकीन भले ही न करें, लेकिन देखते और पढ़ते बड़े ध्यान से हैं। इनकी कोई भविष्यवाणी कभी गलत नहीं होती क्योंकि जब ये बारिश की भविष्यवाणी करते हैं तो दुनिया के किसी न किसी हिस्से में तो बारिश हो ही रही होती है। फिर भी अगर किस्मत से कहीं मूसलाधार बारिश देखने को मिल जाए तो, किसान फौरन किसी साहूकार से एडवांस में उधार ले लेता है कि सूखा पड़ने के वक्त काम आएगा। मौसम विभाग जो कहे उसका उल्टा समझकर उसी हिसाब से लोग अपनी व्यवस्थाएं भी कर लेते हैं।

मौसम विभाग और ज्योतिषाचार्य की सूखा पड़ने की भविष्यवाणी पर किसान अपना बाहर पड़ा अनाज भी उठाकर झोंपड़ी में रख लेता है। जिनके अपने पक्के घर होते हैं, वो उसकी छतों की दरारें ठीक कराने लगते हैं कि अचानक मानसून आ गया तो एक अच्छा और गरीब वोटर होने के नाते मुफ्त में मिले इस सरकारी मकान में कहीं मुंह छिपाने को जगह तो मिल जाएगी, वरना इन आवंटित मकानों के निर्माण में रेता तो लगा ही है, जहां जरुरत समझी गई है, सीमेंट का छौंका भी लगा दिया है ताकि सनद रहे और वक्त जरुरत मकान ढहने के बाद सीमेंट के कुछ अवशेष ढूंढ़कर दिखाने के काम आएं। पहले लोग मौसम का हाल चिड़ियों के पानी में नहाने, चींटियों के अंडे ले जाने और गधों के लौटने से ही अंदाज लगा लेते थे कि इस बार जमाझम बारिश होगी। ऐसा भी नहीं है कि बारिश ना होती हो तो भी उसे चिड़ियों, चींटियों और गधों की लाज बचाने के लिए होना ही पड़ता था। अब वैसी बातें नहीं रहीं। अब तो मौसम विभाग ने चिड़ियों, चींटियों और गधों का कार्य संभाल लिया है। यह भी होता है कि मौसम विभाग अपने उपकरणों की विफलता के बाद इन्हीं प्राकृतिक संकेतों का सहारा लेता हो, क्योंकि कई साल पहले मौसम विभाग ने भविष्यवाणी की थी कि आज बारिश होगी तो बाकायदा अगले दिन बारिश हो ही गई थी। ●

किन्नरों को भी सम्मान चाहिए

महाभारत में बृहन्नला और शिखंडी नामक किन्नरों की महती भूमिका रही, किन्नरों को शंकर जी के अर्धनारीश्वर रूप का प्रतीक भी माना जाता है, त्रेता में किन्नरों का परिचय भगवान श्रीराम के प्रिय भक्त के रूप में मिलता है।

ओमप्रकाश मुंजाल
पूरनपुर पीलीभीत

चपन की किसी कक्षा में पढ़ी, श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी रचित रचना, यदि होता किन्नर नरेश मैं..., के स्वप्निल कल्पना के मनभावन चित्र आज भी मन-मस्तिष्क में उत्थित हो जाया करते हैं। यूं यह संपूर्ण कविता ही भावपूर्ण व रसात्मक है, पर यहां इसकी चंद पंक्तियां ही बानगी के तौर पर प्रस्तुत हैं-

यदि होता किन्नर नरेश मैं, राजमहल में रहता। सोने का सिंहासन होता, सिर पर मुकुट चमकता।।

वंदीजन गण गाते रहते, दरवाजे पर मेरे। प्रतिदिन नौबत बजती रहती, संध्या और सवेरे।।

राजमहल में धीमे-धीमे, आती देख सवारी। रुक जाते पथ दर्शन करने, प्रजा उमड़ती सारी।।

माहेश्वरी जी ने यह कविता मानव की ही अधिक श्रेष्ठ व सुंदर श्रेणी, 'किन्नर', जिनके वंशज काल क्रमानुसार आज भी हिमाचल प्रदेश के, 'किन्नौर' जिले में रहते हैं, पर लिखी थी। इस बीच किन्नर से ही जुड़ा एक सुंदर कार्य यह हुआ, कि 1914 में सर्वोच्च न्यायालय ने 'हिजड़ा' समाज के लिए,'थर्ड जेंडर' और 'किन्नर' शब्द का प्रयोग किया। प्रकारांतर से यह कार्य सदियों से उपेक्षित इस समाज के लिए, 'इंसानियत का गहना' है। हालांकि जैसा 'किन्नर'=किम (क्या)+'नर' (पुरुष) से ही विदित है, कि पूर्व में 'हिजड़ा' कहा जाने वाला समाज युगों से उपेक्षित, अभिशप्त, शोषित एवं प्रताड़ित जीवन जीता आ रहा है। कभी मांगलिक और खुशी के आयोजनों में उसका नाचना, गाना, बजाना देखकर इसे, 'मनोरंजन का साधन' समझा गया। कभी इसकी ताली चटकाने की मिमिक्री कर इसका मजाक उड़ाया गया और कभी 'हिजड़ा' व 'छक्का' कहकर इसे घृणा पूर्वक ऐसे अपमानित किया गया, मानो यह मानव न होकर कोई तुच्छ जीव हो। किन्नरों का यत्किंचित उल्लेख संस्कृत ग्रंथों, पुराणों तथा महाभारत में भी मिलता है। महाभारत में बृहन्नला और शिखंडी नामक किन्नरों की महती भूमिका रही। किन्नरों को शंकर जी के अर्धनारीश्वर रूप का प्रतीक भी माना जाता है। त्रेता में किन्नरों का परिचय भगवान राम के प्रिय भक्त के रूप में मिलता है। कहते हैं, भगवान राम ने वनवास के लिए जब अयोध्या से प्रस्थान किया था और अयोध्यावासी राम, सीता और लक्ष्मण के पीछे-पीछे नगर से बाहर काफी दूर तक निकल आए थे, तब प्रभु राम ने, 'अयोध्या के नर-नारियों' से लौट जाने का आग्रह किया था। सो नर और नारियां, दोनों अपने घरों को लौट गऐ। पर गए जबकि किन्नर नहीं लौटे, क्योंकि प्रभु श्रीराम ने, 'किन्नर' शब्द का संबोधन ही नहीं किया था। अस्तु किन्नरगण वहीं नगर के बाहर ही 14 वर्षों तक खड़े रहकर अपने प्रभु श्रीराम के आगमन की प्रतीक्षा करते रहे। तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' में कई स्थानों पर किन्नरों का वर्णन किया है।

'पुरुष नपुंसक नारि वा, जीव चराचर कोइ । सर्व भाव भज कपट तजि, मोहि परम प्रिय सोइ।।

देवाधिदेव शंकर और विष्णु अवतार श्रीराम के भक्त होने के कारण किन्नरजन दैवीय विभूतियों से भी संपन्न माने जाते हैं, इसलिए इनका कभी उपहास नहीं करना चाहिए, इन्हें शुभदर्शन और शुभागमन माना जाता है।

इसी प्रकार तीर्थराज, प्रयाग का वर्णन करते हुए। शायद अयोध्याकांड में गोस्वामी जी कहते हैं।।

माघ मकरगति रवि जब होई। तीरथपति आवे सब कोई।।

देब, दनुज, किन्नर, नर श्रेणी। सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी।।

अतः देवाधिदेव शंकर और विष्णु अवतार श्रीराम के भक्त होने के कारण किन्नरजन दैवीय विभूतियों से भी संपन्न माने जाते हैं। इसलिए इनका कभी उपहास नहीं करना चाहिए। इन्हें शुभदर्शन और शुभागमन माना जाता है। किन्नर जब ताली चटका-चटका कर याचना करते हैं, तो इसका एक विशिष्ट भाव भी होता है, जो प्रस्तुत श्लोक में प्रकट है।

याचकाः नैव याचन्ते,दीक्ष्यामि गृहे-गृहे। दीयताम-दीयतम न तु स्यात् मादृशी दशा।

यानी याचक भिक्षा नहीं मांगते, वरन घर-घर जाकर यह दीक्षा देते हैं, कि 'देते रहो'-'देते रहो', अन्यथा तुम्हारी भी दशा मेरी जैसी हो जाएगी। किन्नरों को दान में श्रृंगारदानी देना शुभ माना जाता है और दान देने के लिए बुध का दिन सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। व्यापक या मोटे अर्थ में 'थर्डजेंडर', 'किन्नर', 'हिजड़ा', 'नपुंसक', 'छक्का', 'गे', 'ट्रांसजेंडर', 'बाइसेक्सुयल', 'इंटरसेक्स', 'क्वीर' आदि सभी को 'किन्नर' माना जाता है और इन सबके लिए,'एलजीबीक्यूआईए' शब्द प्रयुक्त है। पर, इन सभी में यत्किंचित अंतर है। जन्म से एक ही जेंडर में रहने वाले, किन्नर, हिजड़ा या थर्ड जेंडर कहलाते हैं और बाद में परिवर्तनीय लिंग के केस, ट्रांसजेंडर कहलाते हैं। शुभंकर माने जाने के बावजूद किन्नरों की विडंबना का अंतहीन इतिहास रहा है। आज भी यह समाज हर प्रकार से हेय व निकृष्ट जीवन यापन के लिए अभिशप्त है। कहा जाता है, 'चैरिटी बिगिंस एट होम।' किन्नर का अपमान और उत्पीड़न उसके घर से ही शुरू होता है। फिर उसके दुर्भाग्य का अंत कहां है! किन्नर संतान को कोई भी दंपत्ति नहीं रखना चाहता। मां का दिल पसीजता भी है, तो बाप के समक्ष उसकी कुछ नहीं चलती। किन्नर पैदा होने पर बाप की तो नाक ही कट जाती है। 'जमाना क्या कहेगा, ठाकुर साहब के यहां हिजड़ा पैदा हुआ है।' अब ठाकुर, ब्राह्मण, वैश्य या किसी भी जाति के मूर्ख को कौन समझाए, कि इस रूप में जन्म लेने के लिए बच्चे का क्या दोष है? भले तेरा दोष हो, पर मासूम शिशुओं का क्या दोष है? लोगों की मानसिकता देखें, खुद नाजायज होते हैं और मासूम बच्चे को 'नाजायज' बताकर अंधेरे-उजाले में नदी-नालों में फेंक आते हैं। उस अभागे की शोकनीय गति की कल्पना कीजिए, जो अपने ही पिता के आगे रोता व गिड़गिड़ाता हुआ घर में पड़े रहने की भीख मांग रहा है। और निष्ठुर पिता उसे घर से घसीटता हुआ बाहर कर देता है। बच्चे के कुछ भी गलत न करने के बावजूद बाप उसे घर में शरण नहीं देता, जबकि जिन्हें वह अच्छा समझता है, वे अच्छे बेटा-बेटी आगे चलकर भले ही उसकी नाक क्यों न कटवा दें। घर से अपमानित होकर बाहर निकलने वाली संतान खाली हाथ घर से निकलती है। न हाथ में पैसा होता है, न कोई रोजगार। घर से अपमानित होने के कारण बाहर वाले भी हेय दृष्टि से देखते हैं। ऊपर से मन में जो होता है वो पूर्णतः असुरक्षित होने की भावना।

किन्नरों के मन की संवेदना समझें

'थर्ड जेंडर' होने की बात जंगल की आग जैसी फैलती है। स्वयं को जीवित रखना और समाज में पहले से ही भूखे भेड़ियों का चारों ओर रहने-घूमने के कारण यह संतान शीघ्र ही वेश्यावृत्ति की चपेट में आ जाती है और एड्स आदि जटिल व असाध्य यौन रोगों से ग्रस्त होकर शीघ्र ही दुनिया से विदा भी हो जाती है। हालांकि यह बालक भी अन्य बालकों की तरह ही खेलना, पढ़ना और जीवन में कुछ बनना चाहता था। पर हतभाग्य! उसके लिए ब्रह्मा की लिखी को क्या कहा जाए! माता-पिता, सामाजिक और कथित समझदार लोग भूल जाते हैं, कि सामान्य व्यक्ति की भांति किन्नर के मन-मस्तिष्क में भी भाव संवेदनाएं होती हैं, उनकी वेदना, पीड़ा की गठरी को निरीह का कोलाहल और द्वंद्व से भरा हुआ मन ही समझ सकता है। पढ़ने को लालायित होने के बाद भी 2014 से पूर्व तो यह स्कूल में दाखिला भी नहीं ले सकता था, क्योंकि तब दाखिला चाहने वाले छात्रों के लिए लड़का व लड़की को छोड़कर तीसरा कालम ही नहीं होता था। कोविड के कारण 2021 में जनगणना नहीं हो सकी। लिहाजा 2011 की गत जनगणना के अनुसार देश में किन्नरों की संख्या 4.88 लाख थी, जो अब सात लाख के करीब होगी। किन्नरों की संख्या सर्वाधिक उत्तर प्रदेश में है, उसके बाद महाराष्ट्र, बिहार और गुजरात आदि में।

किन्नरों के हित की योजनाएं

किन्नरों की स्थिति सुधारने के लिए स्वतंत्रता के बाद सामाजिक, प्रशासनिक और साहित्यिक क्षेत्र में कार्य तो हुए, पर अति मंद गति से। इन कार्यों को विशेष गति 10-12 वर्षों में मिली। यानी 2014 में सुप्रीम कोर्ट ने 'हिजड़ा' के स्थान पर,'थर्ड जेंडर' शब्द का प्रयोग किया। 2015 में कांग्रेस के सांसद, शशि थरूर ने किन्नरों में समलैंगिक संबंध को वैधता दिलाने के लिए संसद में प्रस्ताव रखा, जो पास न हो सका। 2017 में सुप्रीम कोर्ट ने किन्नरों के निजता के अधिकार को बरकरार रखा, जिससे किन्नर समाज में आत्म सम्मान की भावना को बल मिला। दिसंबर 2018 को सुप्रीम कोर्ट ने धारा 377(1) को अपराध की श्रेणी से हटा दिया, जिसे पहले समलैंगिक संबंध होने के कारण अपराध की श्रेणी में रखा गया था। ट्रांसजेंडर व्यक्ति एक्ट 2019 में लिंग पहचान का अधिकार खुद संबंधित जातक को दिया गया तथा प्रावधान किया गया कि किन्नरों के साथ भेदभाव करने पर जुर्माने सहित 6 माह से 2 साल तक की सजा हो सकती है। यह प्रावधान भी किया गया, कि बड़े होने पर किसी भी तरह के लिंग परिवर्तन की स्थिति में डीएम को प्रार्थना पत्र देकर सीएमओ की जांचोपरांत परिवर्तित लिंग का प्रमाण पत्र बनवाया जा सकता है। किन्नरों के हितों को सुरक्षित रखने की दृष्टि से राष्ट्रीय परिषद का गठन किया गया जिसमें केंद्रीय सामाजिक न्याय मंत्री अध्यक्ष, सामाजिक न्याय राज्य मंत्री उपाध्यक्ष, सामाजिक न्याय मंत्रालय के सचिव सदस्य, स्वास्थ्य, गृह, मानव संसाधन विकास मंत्रालय से एक-एक प्रतिनिधि सदस्य, नीति आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग तथा राज्य सरकारों से एक-एक प्रतिनिधि सदस्य, ट्रांसजेंडर के पांच प्रतिनिधि सदस्य, गैर सरकारी संगठनों के पांच प्रतिनिधि सदस्य बनाए गए। राष्ट्रीय परिषद के अधिकारों का संरक्षण अधिनियम 2019 में सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय परिषद को अधिकार दिया गया कि वो किन्नरों से संबंधित कार्यक्रमों, परियोजनाओं व नीतियों की निगरानी व मूल्यांकन करेगी, शिकायतों का निस्तारण करेगी तथा सभी विभागों की गतिविधियों की समीक्षा करेगी। किन्नरों के अधिकारों का संरक्षण नियम 2020 के अनुरूप, राष्ट्रीय पोर्टल लॉन्च किया गया। इसमें देश में कहीं से भी प्रमाण-पत्र और पहचान-पत्र के लिए डिजिटल आवेदन किया जा सकता है, ताकि प्रक्रिया में पारदर्शिता बनी रहे, अफसरों द्वारा की जाने वाली कार्रवाई पर नजर रहे और किन्नरों व अफसरों की सीधी बातचीत को रोका जा सके। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा हर प्रांत में एक आश्रय गृह (गे हाउस), जिसकी अधिकतम क्षमता 25 किन्नरों की होगी, प्रत्येक प्रांत में खोला जाएगा। गुजरात में लक्ष्य ट्रस्ट से संचालित एक आश्रय ग्रह बन भी चुका है। किन्नरों के लिए निशुल्क परामर्श सेवा हेल्पलाइन 888213897 आरंभ की गई। मुस्कान योजना के अंतर्गत सीमांत किन्नरों के लिए एक व्यापक पुनर्वास की योजना शुरू की गई। केरल, तमिलनाडु, चंडीगढ़, उड़ीसा आदि प्रांतों ने किन्नरों के कल्याण के लिए अपने-अपने यहां विशेष कानून, नीतियां और योजनाएं क्रियान्वित की हैं।

ट्रांसजेंडर व्यक्ति एक्ट 2019 में लिंग पहचान का अधिकार खुद संबंधित जातक को दिया गया तथा प्रावधान किया गया कि किन्नरों के साथ भेदभाव करने पर जुर्माने सहित 6 माह से 2 साल तक की सजा हो सकती है।

हाईटेक हुए किन्नर

अलबत्ता उपर्युक्त प्रयास से आज का किन्नर भी काफी हाईटेक और उन्नत हो रहा है। वह राजनीति में भी आ चुका है, समाज में भी चमक चुका है। सरकारी सेवाओं में भी दस्तक दे चुका है। आज मुंबई की पूजा शर्मा, बॉलीवुड की रेखा के नाम से सेलिब्रिटी बन चुकी हैं। इससे पूर्व शबनम बानो (मौसी) मध्य प्रदेश में सुहागपुर विधानसभा क्षेत्र से 1998 से 2003 तक विधायक रह चुकी हैं। किन्नर आशा देवी (स्व.) गोरखपुर की मेयर रह चुकी हैं। तमिलनाडु के मदुरई की नटराज को नृत्य के लिए पद्मश्री सम्मान मिल चुका है। सोनम किन्नर वर्तमान में उत्तर प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री हैं। इतना होने के बाद भी यह नहीं कहा जा सकता कि आज का किन्नर एक आम आदमी की तरह सामान्य और सुख-सुविधा से संपन्न जीवन जी रहा है। सामान्य नर-नारी और किन्नरों के जीवन में सामाजिक स्तर पर व्यवहार और आर्थिक स्तर पर जीवन की मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता में जहां अंतर न रह जाए, वहां तक किन्नरों को लाने के लिए अभी भी बहुत किया जाना शेष है।

विपक्षियों ने ली मोदी को जिताने की सुपारी

पाकिस्तान के युवा मान रहे हैं कि हिंदुस्तानी बड़े सौभाग्यशाली हैं जिन्हें श्रीराम के दर्शन भव्य मंदिर में करने का मौका मिला, पाकिस्तानी तो अयोध्या की सजावट देखकर भी हैरान हैं, क्योंकि ऐसी अयोध्या की कल्पना किसी ने नहीं की होगी, दुर्भाग्य से भारत में रहने वाले राजनीतिक हिंदू राम के अस्तित्व को ही नकारते हैं।

उदयभान सिंह
लेखक

भारत में जहां भाजपा विरोधी सनातन और भगवान श्रीराम के लिए आपत्तिजनक टिप्पणी कर रहे हैं वहीं मुस्लिम देश पाकिस्तान के युवाओं में रामायण के प्रति क्रेज बढ़ रहा है, पाकिस्तानी यूथ भी सनातन को गूगल और यूट्यूब पर सर्च कर रहे है। मुस्लिम देश में श्रीराम का नाम आदर से लिया जा रहा है। कंधे पर केसरिया ध्वज, पीठ पर राम मंदिर की तस्वीर और जय श्रीराम का नारा लिखे हुए बैनर के साथ मुख में राम नाम और राम भक्ति में लीन होकर मुंबई से अयोध्या के लिए पैदल यात्रा करने वाली मुंबई की शबनम शेख की खूब चर्चा हो रही है, यूपी और बिहार में मजलिसों में मौलाना रामकथा सुनाने लगे, भजनों पर नृत्य करने लगे ऐसे वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल भी हुए, लेकिन अफसोस भारत में ही बैठे सनातन विरोधी एनसीपी (शरद गुट) के विधायक जितेंद्र आव्हाड भगवान श्रीराम को मांसाहारी बता देते हैं। तर्क देते हैं उस कालखंड में मेथी और पालक नहीं होता था, फिर वो क्षत्रिय थे इसलिए मांसाहारी थे, इस तरह के कुतर्क के बाद विवाद बढ़ा तो विधायक जितेंद्र आव्हाड ने माफी मांगी है। ऐसे में सवाल उठता है कि एनसीपी (शरद गुट) के विधायक जितेंद्र आव्हाड को यह ज्ञान कहां से प्राप्त हुआ कि राम मांसाहारी थे? इसी तरह तमिलनाडु के सीएम के बेटे उदयनिधि स्टालिन ने सनातन धर्म को सामाजिक बुराइयों के लिए जिम्मेदार ठहराते हुए इसे समाज से खत्म करने का बयान दिया था। इससे भी आगे द्रमुक के सांसद सेंथिल कुमार ने तो हिंदी पट्टी के राज्यों को गौमूत्र राज्य बता दिया था, वह भी लोकसभा के भीतर। सेंथिल कुमार ने लोकसभा में तर्क दिया था कि भाजपा दक्षिण भारत में कहीं नहीं है। केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में हम बहुत मजबूत हैं। लालू प्रसाद यादव की पार्टी आरजेडी विधायक फतेह बहादुर सिंह ने राबड़ी देवी के आवास के पास पोस्टर लगा दिया, जिसमें लिखा 'मंदिर का मतलब मानसिक गुलामी का मार्ग है।' वहीं बिहार के सीएम नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू के वरिष्ठ नेता शिवानंद तिवारी ने तो सनातन धर्म पर ऐसी टिप्पणी कि जिससे खुद उनके ही चरित्र पर कालिख पुत गई। जेडीयू नेता शिवानंद तिवारी ने कहा कि महिलाओं के लिए सनातन धर्म में कहा गया है कि ये नर्क का द्वार है। ऐसे में सवाल उठता है कि बूढ़े हो चुके शिवानंद तिवारी क्या अपने परिवार की महिलाओं के बारे में ऐसा ही विचार रखते हैं? यूपी में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी प्रसाद मौर्य तो हिंदू धर्म को धोखा बता चुके हैं, रामचरित्र मानस को जलवा चुके हैं, वो जब भी मुंह खोलते हैं, सनातन और हिंदुओं के खिलाफ ही बोलते हैं। ये वही स्वामी प्रसाद मौर्य हैं जो यूपी के चुनाव में अखिलेश यादव को यूपी का सीएम बनाने के दावे ठोकते थे और खुद विधानसभा चुनाव हार गए थे। पता नहीं विपक्षी नेताओं को ऐसा ज्ञान कहां से मिलता है? कौन इनके सलाहकार हैं? क्या इस तरह के बयान देकर विपक्षी नेता पर्दे के पीछे से भाजपा की मदद नहीं कर रहे हैं? क्या विपक्षी नेताओं ने इंडिया गठबंधन में शामिल पार्टियों का अस्तित्व समाप्त करने की सुपारी ले ली है। क्या गठबंधन के कुछ नेताओं ने 2024 में भाजपा को जिताने की ठान ली है? क्योंकि दुश्मन देश में भी सनातन और श्रीराम का सम्मान हो रहा है, देश ही नहीं दुनियाभर में राम का गुणगान हो रहा है और इंडिया गठबंधन के नेताओं की मति मारी गई है जो श्रीराम और सनातन का अपमान कर रहे हैं। इससे लगता है कि जैसे त्रेतायुग में 'रावण की मति मारी गई थी', उसी तरह कांग्रेस सहित इंडिया गठबंधन के नेताओं की मति मारी गई है। विनाश काले विपरीत बुद्धि वाला मुहावरा यहां सटीक बैठता नजर आ रहा है।

यूपी और बिहार में मजलिसों में मौलाना रामकथा सुनाने लगे, भजनों पर नृत्य करने लगे ऐसे वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल भी हुए, लेकिन अफसोस भारत में ही बैठे सनातन विरोधी एनसीपी (शरद गुट) के विधायक जितेंद्र आव्हाड भगवान श्रीराम को मांसाहारी बता देते हैं।

अभागे रहे विपक्षी नेता

अयोध्या में भव्य राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए राजनेताओं से लेकर फिल्मी हस्तियों तक को निमंत्रण पत्र भेजे गए। भाजपा ने तो इसे अपना आयोजन बना लिया। मंदिर के शिलान्यास की पहली ईंट रखने वाले बिहार के ही कामेश्वर चौपाल बिहार के पूर्व सीएम लालू प्रसाद यादव के परिवार और सीएम नीतीश कुमार के घर न्यौता देने गए थे। हालांकि उनकी मुलाकात नहीं हो पाई। खैर निमंत्रण दोनों के घर पहुंच गया था। निमंत्रण पत्र मिलने की बात सबसे पहले कांग्रेस ने कबूल की थी। पर कांग्रेस ने इसे भाजपा और आरएसएस का इवेंट बता कर जाने से साफ मना कर दिया। नीतीश कुमार ने न निमंत्रण पत्र मिलने की पुष्टि की है और न जाने के बारे में कुछ कहा। किंतु आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव ने अयोध्या जाने से साफ मना कर दिया। उनके बेटे और बिहार के डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने तो मंदिर की जरूरत पर ही सवाल खड़े करते हुए कहा कि कोई बीमार होता है तो पहले अस्पताल जाता है या मंदिर? खैर इन लोगों से ज्यादा चालाक सपा के नेता यूपी के पूर्व सीएम अखिलेश यादव और एनसीपी के अध्यक्ष शरद पवार निकले। उन्होंने सीधे ना कहने की बजाय यह कहा कि वे 22 को नहीं जा पाएंगे, पर उसके बाद दर्शन जरूर करेंगे। निमंत्रण ममता बनर्जी को भी मिला, लेकिन वो भी नहीं आई। वामपंथी विचारधारा के सीताराम येचुरी ने सबसे पहले अयोध्या जाने से इनकार किया था। अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से दूरी बनाने वालों को वो लोग अभागा बता रहे हैं जिन्हें प्राण प्रतिष्ठा का साक्षी बनने सौभाग्य मिला।

सबक नहीं ले रही कांग्रेस

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह को लेकर कांग्रेस दो फाड़ हो गई। कुछ नेताओं ने प्राण प्रतिष्ठा में जाने की घोषणा की तो कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने भाजपा और आरएसएस का इवेंट बता कर शामिल होने से इनकार कर दिया। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने एक बार ये भी कहा था कि जो अयोध्या जान चाहता है वो जा सकता है, लेकिन वो नहीं जाएंगे। यह एक तरह से गुलामों को अयोध्या जाने की इजाजत थी। लिहाजा यूपी कांग्रेस के कुछ नेता प्राण प्रतिष्ठा से पहले 15 जनवरी को अयोध्या गए और सरयू में डुबकी लगाकर चले आए। हालांकि कांग्रेस के प्रवक्ता टीवी डिबेट में श्रीराम मंदिर का मार्ग प्रशस्त करने में कांग्रेस नेता स्व. राजीव गांधी की महत्वपूर्ण भूमिका बताते रहे। दावा करते रहे कि प्रधानमंत्री रहते राजीव गांधी ने ही मंदिर का ताला खुलवाया था। अब जब प्राण प्रतिष्ठा हो रही है तो स्व.राजीव गांधी की पत्नी का समारोह का न्यौता मिलने के बाद अयोध्या न जाने का फैसला साफ करता है कि कांग्रेस सिर्फ श्रेय लेना चाहती है। दरअसल कांग्रेस वो पार्टी बन गई है जो 2014 से लेकर अब तक हवा का रुख भांपने में मात खाती आ रही है। 2014 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की पराजय के बाद एके एंटनी की अध्यक्षता में कांग्रेस ने हार की वजह का पता लगाने के लिए कमेटी बनाई थी। एंटनी ने अपनी रिपोर्ट में हार के लिए कांग्रेस की अल्पसंख्यकों की पक्षधरता को जिम्मदार माना था। एके एंटनी ने कहा था कि कांग्रेस के लिए हिंदुओं के वोट काफी मायने रखते हैं। हिंदू वोट के प्रति कांग्रेस ने आग्रह दिखाया तो 2019 में पार्टी के लिए चमत्कार हो सकता है। कांग्रेस ने एंटनी की सलाह पर गौर नहीं किया। नतीजतन 2019 भी कांग्रेस के लिए शुभ नहीं रहा। राम मंदिर मुद्दे पर कांग्रेस के शीर्ष नेताओं के राम विरोधी रुख से 2024 भी कांग्रेस के हाथ से फिसल जाए तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी।

मुलायम की मूर्ति चाहते हैं कारसेवक

ये वो कांग्रेस है जिसके नेता और प्रवक्ता कभी टीवी चैनलों पर बैठकर भाजपा को ताने मारते थे कि रामलला हम आएंगे मंदिर वहीं बनाएंगे पर तारीख नहीं बताएंगे। वही नेता और प्रवक्ता आज रामायण की चौपाइयां सुना रहे हैं। जिस कांग्रेस ने श्रीराम को काल्पनिक बताया था उस कांग्रेस के नेता अब रामायण रट चुके हैं। टीवी शो की डिबेट में सियापति रामचंद्र की जय से अपनी बात शुरू करते हैं। जो कभी तारीख पूछते थे गर्व से कह रहे हैं कि राम तो हमारे आराध्य हैं। राम कण-कण में विराजमान है। जिस समाजवादी पार्टी के नेता स्वामी प्रसाद मौर्य रामचरित्र मानस की चौपाई का हवाला देकर तुलसीदास और सनातन धर्म की गलत व्याख्या करते हैं। जिस समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव ने अयोध्या में निहत्थे कार सेवकों पर गोलियां चलवाई, पवित्र सरयू नदी को कारसेवकों के खून से लाल किया उस पार्टी के महासचिव स्वामी प्रसाद मौर्य अयोध्या में कारसेवकों के कत्लेआम को भी जायज बता रहे हैं। कानून व्यवस्था के नाम पर निहत्थे कारसेवकों पर गोलियां चलाने के मुलायम सिंह यादव के

- **पता नहीं विपक्षी नेताओं को ऐसा ज्ञान कहां से मिलता है? कौन इनके सलाहकार हैं? क्या विपक्षी नेताओं ने इंडिया गठबंधन में शामिल पार्टियों का अस्तित्व समाप्त करने की सुपारी ले ली है? क्या गठबंधन के कुछ नेताओं ने 2024 में भाजपा को जिताने की ठान ली है?**
- **जो श्रीराम और सनातन का अपमान कर रहे हैं, उससे लगता है कि जैसे त्रेतायुग में 'रावण की मति मारी गई थी', उसी तरह कांग्रेस सहित इंडिया गठबंधन के नेताओं की मति मारी गई है, इसलिए विनाश काले विपरीत बुद्धि वाला मुहावरा यहां सटीक बैठता है।**

फैसले को सही बता रहे हैं। यही दावा मुलायम सिंह यादव के छोटे भाई शिवपाल यादव ने भी किया। जबकि इसी पार्टी के प्रवक्ता राजकुमार भाटी टीवी डिबेट में श्रीराम को अपना आराध्य बताते हैं। रोजाना श्रीराम की पूजा करने का दावा करते हैं। जिन लोगों ने अयोध्या में सपा के शासन काल की क्रूरता देखी है वो सपा संस्थापक मुलायम सिंह यादव की अयोध्या में मूर्ति लगाने की मांग कर रहे हैं ताकि रामलला के दर्शन करने वाले उस क्रूर शासक मुलायम सिंह यादव को धिक्कार सकें जिन्होंने कारसेवकों का कत्लेआम कराया था। ये वो लोग हैं जिन्होंने कारसेवा के दौरान लाठी या गोली खाई हैं। नेशनल कांफ्रेंस नेता और जम्मू-कश्मीर के पूर्व सीएम फारूक अब्दुल्ला कह रहे हैं कि राम तो सबके हैं। यह खुशी की बात है कि राम का भव्य मंदिर बन गया। राम हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई सबके आदर्श हैं। फारूख अब्दुल्ला विपक्षी दलों के गठबंधन इंडिया का हिस्सा भी हैं। जिस तरह विपक्षी नेताओं ने प्राण प्रतिष्ठा समारोह से कन्नी काटनी शुरू की है, वैसे में फारूक अब्दुल्ला की भावना विपक्ष की आंख खोलने वाली है।

पाकिस्तान में प्रभु राम का डंका

इसके विपरीत क्या किसी ने सोचा है कि जिस भारत-पाकिस्तान के क्रिकेट मैच के दौरान भारत के जीतने पर पाकिस्तान में टीवी फूटते थे उस पाकिस्तान में रामायण देखने के लिए कभी चंदा इकट्ठा किया गया था। ये और किसी का नहीं बल्कि मशहूर डायरेक्टर रामानंद सागर के ही करिश्मे का असर था। भारत और पाकिस्तान के बीच कई मौकों पर विवाद देखने को मिलता रहता है। वो चाहे युद्ध का मैदान हो या फिर क्रिकेट का, इसके बाद भी दोनों देशों की आम आवाम के बीच एक प्रेम का भाव भी है, जो बेहद सुंदर लगता है। इसका एक सुंदर उदाहरण भी है। पाकिस्तान में कभी चंदा जुटा कर रामायण देखी गई थी। ये दिलचस्प किस्सा भी एक बार पाकिस्तान में रहने वाले मोहब्बत राम दास के इंटरव्यू के बाद सामने आया था। बात कोरोना काल में लॉकडाउन के दौरान की है जब दूरदर्शन पर रामायण और महाभारत जैसे धार्मिक सीरियल्स का री-टेलिकास्ट शुरू हुआ था। तब मीडिया के सामने मोहब्बत राम दास ने गुजरे हुए दिन को याद किया और बताया कि कैसे उनकी मदद से पाकिस्तान में कई सारे लोगों ने एक साथ बैठकर रामायण देखी थी। अब अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर बना तो पाकिस्तान में मंदिर की भव्यता को देखकर यूथ हैरान हैं। पाकिस्तान के युवा रामायण सीरियल को देखकर बता रहे हैं कि कैसे श्रीराम मर्यादापुरुषोत्तम बने, राम आदर्श थे? जिन्होंने अपने पिता दशरथ जी के कहने पर वनवास काटा। पाकिस्तानियों को सबसे ज्यादा उत्तरकांड का वो भजन प्रभावित कर रहा है जो लव-कुश पर फिल्माया गया है...। 'हम कथा सुनाते राम सकल गुणधाम की ये रमायण है पुण्य कथा श्रीराम की...।' ये लाइन सुनाते समय पाकिस्तानी युवा भावुक भी हो रहे हैं। पाकिस्तान की आर्थिक हालत खराब है, महंगाई आसान छू रही है। ऐसे में पाकिस्तान में हर कोई युवा मान रहा है कि सनातन धर्म ही सबसे पुराना है। पाकिस्तान के युवा मान रहे हैं कि हिंदुस्तानी बड़े सौभाग्यशाली हैं जिन्हें श्रीराम के दर्शन भव्य मंदिर में करने का मौका मिलेगा। पाकिस्तानी तो अयोध्या की सजावट देखकर भी हैरान हैं। क्योंकि ऐसी अयोध्या की कल्पना उन्होंने कभी नहीं की होगी। लेकिन दुर्भाग्य से भारत में रहने वाले राजनीतिक हिंदू राम के अस्तित्व को ही नकारते हैं।

भोजपत्र भरेगा राज्य का खजाना

ऋषि-मुनियों ने प्राचीन काल में जब कागज की खोज नहीं हुई थी तब ग्रंथों की रचना भोजपत्र पर ही की थी, जो आज भी हमारे संग्रहालयों में मौजूद है, पांडुलिपियों को भी भेजपत्र पर ही लिखा गया है, छोटे रेशों के कारण उसकी लुगदी से टिकाऊ कागज भी बनता है।

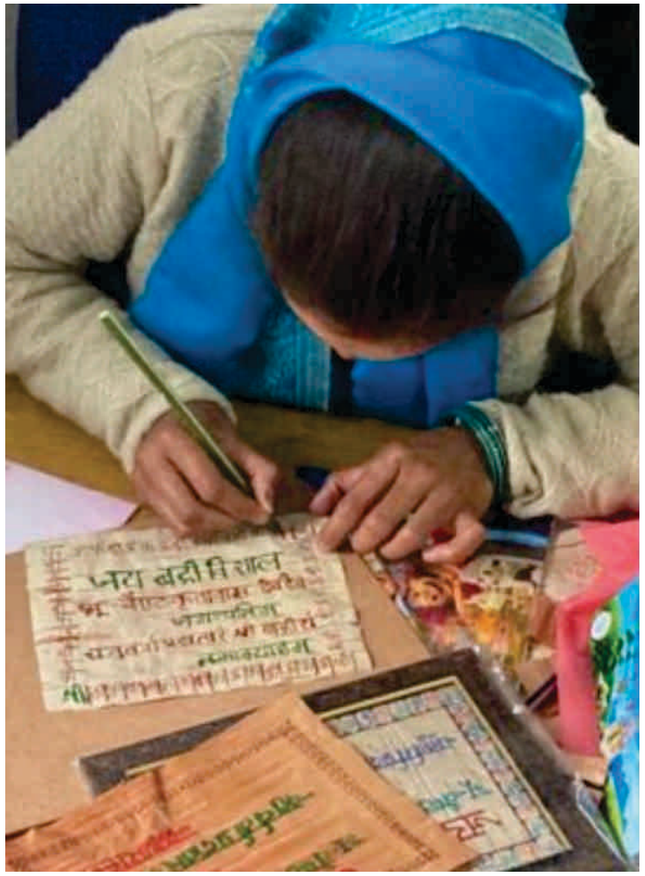

भोजपत्र यानी भोज वृक्ष की छाल, यानी उत्तराखंड का खजाना भरने वाला वृक्ष। भोज वृक्ष उच्च हिमालयी क्षेत्र में पाए जाते हैं। भोजपत्र का प्राचीनकाल से ही बहुत महत्व रहा है। ऋषि-मुनियों ने प्राचीन काल में जब कागज की खोज नहीं हुई थी तब ग्रंथों की रचना भोजपत्र पर ही की थी, जो आज भी हमारे संग्रहालयों में मौजूद है। पांडुलिपियों को भी भेजपत्र पर ही लिखा गया है। छोटे रेशों के कारण उसकी लुगदी से टिकाऊ कागज भी बनता है। इसकी लकड़ी का उपयोग ड्रम, सितार, गिटार आदि बनाने में भी किया जाता है। बेलारूस, रूस, फिनलैंड, स्वीडन और डेनमार्क, उत्तरी चीन के कुछ हिस्सों में बर्च के रस का उपयोग उम्दा बीयर के रूप में होता है। इससे जाइलिटाल नामक मीठा एल्कोहल भी मिलता है जिसका उपयोग मिठास के लिए होता है। भोज वृक्ष 4,500 मीटर की ऊंचाई पर उगते हैं। इस समय देश में भोजपत्र के जंगल नाममात्र के ही रह गए हैं। जिससे भोजपत्र विलुप्त होती प्रजाति में शामिल किया गया है। भोजपत्र के जंगल उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर और हिमाचल जैसे राज्यों में ही सिमटकर रह गए हैं। हिमाचल प्रदेश के जनजातीय जिला लाहौल स्पीति के सिस्सु में भोज वृक्ष की नर्सरी तैयार होने पर वन विभाग को इसके जंगल बढ़ने की उम्मीद बढ़ी है। लाहौल स्पीति के वन विभाग ने सिस्सु के पास नर्सरी में पांच हजार भोजपत्र के पौधे तैयार किए हैं। इससे पहले भोजपत्र के पौधे प्राकृतिक रूप से ही जड़ों से तैयार होते थे, लेकिन यह पहला प्रयास है जब भोजपत्र के बीज से पौधे तैयार किए गए है। भोज वृक्ष की छाल सर्दियों में पतली-पतली परतों के रूप में निकलती है, जिन्हें प्राचीन काल में मुख्य रूप से कागज की तरह इस्तेमाल किया जाता था। यानी आदिकाल में जब लिखने के लिए कागज का आविष्कार नहीं हुआ था, तब वेदों और पुराणों की रचना भोजपत्र पर ही की गई थी। भोजपत्र में लिखी गई कोई भी चीज हजारों वर्ष तक रहती है। वहीं भोज वृक्ष हिमालय ठंडे इलाके में उगने वाला पतझड़ी वृक्ष है, जो लगभग 20 मीटर तक ऊंचा हो सकता है। हालांकि जानकारी के अभाव और वन विभाग की लापरवाही से भोज वृक्ष नष्ट होते चले गए। वर्तमान में गिनती के ही भोजवृक्ष बचे हुए हैं।

वैज्ञानिकों का मानना है कि भोजपत्र का उपयोग दमा और मिर्गी जैसे रोगों के इलाज में किया जाता है, उसकी छाल बढ़िया एस्ट्रिंजेट यानी कसावट लाने वाली मानी जाती है, इसलिए बहते खून और घावों को साफ करने में इसका प्रयोग किया जा सकता है।

डॉ.हरीश चंद्र अंडोला
दून यूनिवर्सिटी

भोजपत्र का नाम आते ही उन जहन में प्राचीन पांडुलिपियों का विचार आता है, जिन्हें भोजपत्रों पर लिखा गया है। भोजपत्र पर लिखे गए ग्रंथ हजारों वर्षों से संरक्षित रहते है। देश के कई पुरातत्व संग्रहालयों में भोजपत्र पर लिखी गई सैकड़ों पांडुलिपियां सुरक्षित रखी है। हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का संग्रहालय में कालीदास की वो कृतियों जो भोज-पत्र लिखी गई हैं, का उल्लेख कई स्थानों पर किया है। उनकी कृति कुमार संभवम् में तो भोजपत्र को वस्त्र के रूप में उपयोग करने का जिक्र भी है। भोजपत्र का उपयोग प्राचीन काल में कागज की मुद्रा 'बेरेस्ता' के रूप में भी किया जाता था। इसका उपयोग सजावटी वस्तुओं और चरण पादुकाओं जिन्हें 'लाप्ती' कहते थे, के निर्माण में भी किया जाता था। सुश्रुत एवं वराद मिहिर ने भी भोजपत्र का जिक्र किया है। भोजपत्र का उपयोग काश्मीर में पार्सल लपेटने में और हुक्कों के लचीले पाइप बनाने में भी किया जाता था। वर्तमान में भोजपत्रों पर कई यंत्र लिखे जाते है।

भोजवृक्ष की पहचान

भोज को संस्कृत में भूर्ज या बहुवल्कल कहा गया है। दूसरा नाम बहुवल्कल ज्यादा सार्थक है। बहुवल्कल यानी बहुत सारे वस्त्रों, छाल वाला वृक्ष। भोज को अंग्रेजी में हिमालयन सिल्वर बर्च और विज्ञान की भाषा में बेटूला यूटिलिस कहा जाता है। यह वृक्ष बहुउपयोगी है। इसके पत्ते छोटे और किनारे दांतेदार होते है। वृक्ष पर शहतूत जैसी नर और मादा रचनाएं लगती है, जिन्हें मंजरी कहा जाता है। छाल पतली, कागजनुमा होती है, जिस पर आड़ी धारियों के रूप में तने पर मिलने वाले वायुरंध्र बहुत ही साफ गहरे रंग में नजर आते है। यह लगभग खराब न होने वाली होती है, क्योंकि इसमें रेजिनयुक्त तेल पाया जाता है। छाल के रंग से ही इसके विभिन्न नाम लाल, सफेद, सिल्वर और पीला, बर्च पड़े हैं। भोज पत्र की बाहरी छाल चिकनी होती है, जबकि आम, नीम, इमली, पीपल, बरगद आदि अधिकतर वृक्षों की छाल काली भूरी, मोटी, खुरदरी और दरार युक्त होती है। यूकेलिप्टस और जाम की छाल मोटी परतों के रूप में अनियमित आकार के टुकड़ों में निकलती है। भोजपत्र की छाल कागजी परत की तरह पतले-पतले छिलकों के रूप में निकलती है। भोज के पेड़ हल्की व अच्छी पानी की निकासी वाली अम्लीय मिट्टी में अच्छी तरह पनपते है। आग या अन्य दखलंदाजी से ये बड़ी तेजी से फैलते है। भोज से कागज के अलावा इसके अच्छे दाने वाली, हल्के पीले रंग की साटिन चमक वाली लकड़ी भी मिलती है। जिससे वेनीर और प्लायवुड भी बनाई जाती है। वैज्ञानिकों का मानना है कि भोजपत्र का उपयोग दमा और मिर्गी जैसे रोगों के इलाज में किया जाता है। उसकी छाल बहुत बढ़िया एस्ट्रिंजेट यानी कसावट लाने वाली मानी जाती है। इस कारण बहते खून और घावों को साफ करने में

भोज के पेड़ अच्छी पानी की निकासी वाली अम्लीय मिट्टी में पनपते है, आग या अन्य दखलंदाजी से ये बड़ी तेजी से फैलते है, भोज से कागज के अलावा इसके अच्छे दाने वाली, हल्के पीले रंग की साटिन चमक वाली लकड़ी भी मिलती है।

इसका प्रयोग किया जा सकता है।

चमोली में उच्च हिमालयी क्षेत्रों में उगने वाले दुर्लभ भोजपत्र की छाल महिलाओं के लिए बेहतर आय का जरिया बनने लगी है। जिला प्रशासन द्वारा महिला स्वयं सहायता समूहों को विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान, उत्साहवर्धन और जिलाधिकारी हिमांशु खुराना के मार्गदर्शन में विकासखंड जोशीमठ में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अतंर्गत एसएचजी महिलाओं को भोजपत्र पर कैलीग्राफी व स्ट्रिंग आर्ट एडवांस वर्जन का प्रशिक्षण शुरू किया गया है। जिला प्रशासन के सहयोग से मास्टर ट्रेनर सुरभि रावत द्वारा समूह की महिलाओं को भोजपत्र कैलीग्राफी की बारीकियों के साथ स्केलिंग एवं नवीन तकनीक के बारे में जानकारी दी गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बदरीनाथ भ्रमण के दौरान नीती-माणा एसएचजी की महिलाओं ने उन्हें भोजपत्र पर लिखा अभिनंदन पत्र भेंट किया था। जिसके बाद प्रधानमंत्री ने भोजपत्र के सोविनियर बनाने को लेकर मन की बात एपिसोड में भी महिलाओं की इस पहल की खूब सराहना की थी। इससे प्रभावित होकर समूह की महिलाएं भोजपत्र प्रशिक्षण में बढ़-चढ कर हिस्सा ले रही है। जिला प्रशासन की ओर से पूर्व में विकासखंड जोशीमठ में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के सहयोग से दो चरणों में समूह की 30 महिलाओं को दुर्लभ भोजपत्र पर कैलीग्राफी से आकर्षक सोविनियर बनाने का प्रशिक्षण दिया गया है।

चारधाम यात्रा के दौरान महिलाओं ने विकास विभाग के आउटलेट और एनआरएलएम के माध्यम से भोजपत्र से तैयार किए गए आकर्षक सोविनियर, बदरीनाथ की आरती, माला, राखी, सुंदर स्मृति चिह्न एवं कलाकृतियों का विपणन कर दो लाख से अधिक की आमदनी की है। दुर्लभ भोजपत्र के पौराणिक महत्व एवं इससे बने आकर्षक सोविनियर की मांग को देखते हुए जिलाधिकारी की पहल पर महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनाने की योजना बनाई गई है। परियोजना निदेशक का कहना है कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत महिलाओं के समूहों को उनकी आजीविका संवर्धन व कौशल विकास के लिए जोशीमठ में आठ दिवसीय भोजपत्र पर कैलीग्राफी व स्ट्रिंग आर्ट एडवांस प्रशिक्षण दिया गया है। मास्टर ट्रेनर द्वारा समूह की 21 महिलाओं को कैलीग्राफी की बारीकियों के साथ स्केलिंग व नवीन तकनीक के उपयोग की जानकारी दी गई है, जो आने वाले समय में महिलाओं के लिए स्वरोजगार का एक सशक्त जरिया बनेगा। सुंदर शब्दों को लिखने की कला को कैलीग्राफी कहा जाता है। कैलीग्राफी को हिंदी में अक्षरांकन कहते हैं। कैलीग्राफी एक विजुअल आर्ट है। कैलीग्राफी लिखने वाले प्रोफेशनल आर्टिस्ट को कैलीग्राफी कहते हैं। कैलीग्राफी कई तरह के फॉन्ट, स्टाइल, मॉडर्न और क्लासिक तरीकों का प्रयोग करते हुए बेहतरीन सुलेख लिखते हैं। सुंदर व स्टाइलिस्ट अक्षर को लिखने के लिए खास तरह के पेन, निब, पेंसिल, टूल, ब्रश आदि का इस्तेमाल किया जाता है। लकड़ी के टुकड़ों पर कील और धागे के उपयोग से सजावटी सामग्री बनाने की कला को स्टिरंग आर्ट कहते हैं। इस कला से देश और दुनिया में बड़े पैमाने पर लोग बेहतर आय अर्जित कर रहे हैं। भोजपत्र उच्च हिमालय का मुख्य वृक्ष है। भोजपत्र की विशेषताएं इस क्षेत्र को विशेष बनाती है। जिसे देखते हुए उच्च हिमालय की तरफ जाने वाले प्रत्येक पर्यटक को यहां एक पौधा रोपण करना चाहिए। हिमालय में पर्यावरण प्रभावित होने का असर पूरे देश पर पड़ेगा। उच्च हिमालय में वहां की वनस्पतियों को संरक्षित रखना आवश्यक है। सड़क बन जाने से अब उच्च हिमालय तक काफी अधिक संख्या में पर्यटक पहुंच रहे हैं। जिससे यहां का पर्यावरण निश्चित रूप से प्रभावित होगा। यहां के पर्यावरण को संरक्षित रखने के लिए पौधारोपण आवश्यक है। भोजपत्र उच्च हिमालय का मुख्य वृक्ष है। भोजपत्र की विशेषताएं इस क्षेत्र को विशेष बनाती है।

प्रेरक कथा

रुठने मनाने में न बीते ये...

पति-पत्नी को प्रायः हर समय साथ रहना होता है, अतः उनके बीच मनमुटाव या रुठने जैसी क्रिया का बार-बार होना स्वाभाविक है, जो पति-पत्नी एक दूसरे से रुठने पर जल्दी मान जाते हैं उनका जीवन बहुत अच्छी तरह से चलता है, जो पति-पत्नी एक दूसरे से एक बार रुठने पर मानने का नाम नहीं लेते उनका जीवन तबाह होना निश्चित है।

प्या

सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा, दिल्ली

र झुकता नहीं का ये गीत 'हो दिलबर हो दिलबर जानिया रुठने मनाने में न बीते ये जवानिया...' अपने जमाने में हिट हुआ था। इस गीत में एक संदेश था वो ये कि रूठे स्वजनों को फौरन मनाना और रूठने पर स्वयं भी फौरन मान जाना चाहिए। ऐसा करने से व्यक्ति के चरित्र और स्वभाव का पता चलता है। रूठना और मानना व मनाना जीवन का स्वाभाविक प्रक्रिया है। ये दो विपरीतार्थक नहीं अपितु पूरक शब्द हैं। इसके बिना जीवन की गाड़ी चल ही नहीं सकती, लेकिन रूठने और मानने व मनाने की एक सीमा होती है। सभी समझदार लोग रूठे हुओ को फौरन और बार-बार मनाने की सलाह देते हैं। रहीम कहते हैं...

रूठे सुजन मनाइए जौ रूठें सौ बार,
रहिमन फिरि-फिरि पौहिए टूटे मुक्ताहार।

यदि कोई सुजन अर्थात हमारा कोई स्वजन, कोई प्रिय अथवा कोई अच्छा व्यक्ति हमसे रूठ जाए तो उसे हमेशा ही मना लेना चाहिए। चाहे वो सौ बार अर्थात बार-बार ही क्यों न रूठता हो। रहीम कहते हैं कि यदि मुक्ताहार अर्थात मोतियों का हार टूट कर बिखर जाए तो उसके मोतियों को फिर से धागे में पिरो लेना चाहिए। यदि हम टूटे हुए मुक्ताहार अर्थात बिखरे हुए मोतियों को दोबारा धागे में पिरो लेंगे तो वो पहले की तरह ही उपयोगी और सुंदर हो जाएंगे, फिर से माला तैयार हो जाएगी, जिसे आसानी से पहन सकेंगे। अन्यथा मोती इधर-उधर बिखर कर महत्वहीन हो जाएंगे अथवा खो जाएंगे। उनकी चमक भी जा सकती है। जिस तरह मोती जब तक एक सूत्र में बंधे और गुंथे रहते हैं तभी तक उपयोगी रहते हैं उसी प्रकार से जब तक संबंध मधुर और आत्मीय रहते हैं तभी तक उनका महत्व रहता है। हमारे संबंध तो मुक्ताहार से भी अधिक कीमती और महत्वपूर्ण होते हैं। इसलिए उन्हें हर हाल में टूटने से बचाना चाहिए और संबंध टूट जाने के बाद फौरन उन्हें सुधारने अथवा रूठे हुओ को मनाने का प्रयास करना चाहिए ताकि संबंधों की सार्थकता बनी रहे। क्योंकि टूटे अथवा बिखरे हुए संबंध अनुपयोगी हो जाते हैं।

जब तक संबंध मधुर और आत्मीय रहते हैं तभी तक उनका महत्व रहता है, हमारे संबंध तो एक मोतियों के हार से भी अधिक कीमती होते हैं, इसलिए उन्हें हर हाल में टूटने से बचाना चाहिए और संबंध टूट जाने के बाद फौरन उन्हें सुधारने अथवा रूठे हुओ को मनाने का प्रयास करना चाहिए।

अच्छे संबंध हमारा पोषण और विकास करते हैं, जबकि खराब संबंध हमारे स्वास्थ्य के लिए घातक और हमारी उन्नति में बाधक होते हैं। यदि हम अपने रूठे हुए स्वजनों अथवा प्रियपात्र को नहीं मनाएंगे तो इसका दुष्प्रभाव ही हमारे जीवन पर पड़ेगा। यदि हमारा कोई प्रिय हमसे रूठ जाता है, तो हमें भी अच्छा नहीं लगता। हम भी बेचैन हो जाते हैं और जब तक सामने वाला मान नहीं जाता तब तक हम मानसिक रूप से उद्विग्न रहते हैं। रूठा हुआ व्यक्ति अथवा हम स्वयं कई बार कुछ ऐसा कर गुजरते हैं, जो दोनों के लिए ही ठीक नहीं होता। इसलिए यह अनिवार्य है कि रूठे हुए को फौरन माना लिया जाए, ये हमारे ही हित में होगा। फिर भी यदि हम उसे नहीं मनाते या मनाने का प्रयास नहीं करते हैं तो इसका अर्थ है कि हममें आत्मीयता अथवा प्रेम का अभाव है या फिर अहंकारवश ऐसा नहीं कर रहे हैं। रूठे हुए स्वजनों अथवा प्रियपात्र को फौरन मनाने का अर्थ है कि हम न केवल उससे अगाध प्रेम करते हैं अपितु हम पूर्णतः निरंहकार भी हैं। प्रायः अहंकार, उपेक्षा अथवा स्वार्थ के कारण ही हमारे संबंध खराब होते हैं। जब कोई उपेक्षित अनुभव करता है तभी वह दुखी होता है अथवा रूठता है। जब हम रूठे हुए को फौरन मना लेते हैं तो सामने वाले की ये गलत फहमी भी फौरन ही दूर हो जाती है कि उसकी उपेक्षा की गई थी। यदि हमसे कोई गलती हो गई हो तो उसे स्वीकार कर क्षमा मांगी जा सकती है। ऐसा करेंगे तो सामने वाला न केवल अपने अमर्ष का त्याग कर देगा बल्कि ऐसे में संबंध और अधिक प्रगाढ़ हो जाएंगे इसमें कोई संदेह नहीं।

जब लंबे समय तक रूठना चलता है तो दोनों तरफ से बहुत सी गलत फहमियां बढ़ती चली जाती हैं। जिन्हें बाद में दूर करना मुश्किल हो जाता है। वैसे भी यदि हम अपने प्रियजनों को नहीं मनाएंगे तो उनके सानिध्य के बिना कैसे रहेंगे? और यदि अच्छे लोगों को नहीं मनाएंगे तो उनके मार्ग दर्शन व उनकी संगति से होने वाले लाभों से वंचित रह जाएंगे। अतः रूठे हुए अच्छे व्यक्तियों को मनाना भी हमारे स्वयं के हित में ही होगा। यदि कोई हमसे रूठ सकता है तो हम भी तो किसी से रूठ सकते हैं। हमारा रूठना भी अस्वाभाविक नहीं है। जिस प्रकार किसी रूठे हुए को मनाना और शीघ्र मनाना अनिवार्य है, उसी प्रकार स्वयं रूठने पर हमारा भी शीघ्र मान जाना अच्छी बात है। सामान्यतः किसी बात पर नाराज होकर रूठने पर यदि कोई मनाए तो जल्दी मान जाना व्यक्ति की सरलता व शालीनता का प्रतीक है। इसका सीधा सा अर्थ है कि मन में अत्यधिक क्रोध, कुटिलता अथवा कटुता थी ही नहीं। इस प्रकार का आचरण भावनात्मक दृष्टि से संतुलित व्यक्तित्व का द्योतक है। ऐसा व्यक्ति प्रशंसा का पात्र होता है। ऐसे व्यक्ति जो एक बार रूठने पर किसी भी तरह से नहीं मानते हैं अथवा अत्यधिक नखरे दिखाते हैं। इससे उनके व्यक्तित्व की जटिलता का पता चलता है। सामान्य लोग ऐसे लोगों से दूर रहना चाहेंगे और किसी भी प्रकार के संबंध नहीं बनाना चाहेंगे। वैसे तो रूठने की अवस्था में किसी के भी मनाने पर शीघ्र मान जाना हमारे संबंधों पर बहुत अच्छा और सकारात्मक प्रभाव डालता है, लेकिन पति-पत्नी के संबंधों के निर्वाह में तो ये और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

पति-पत्नी को प्रायः हर समय साथ रहना होता है। अतः उनके बीच मनमुटाव अथवा रूठने जैसी क्रिया का बार-बार व अपेक्षाकृत अधिक होना स्वाभाविक है। जो पति-पत्नी एक दूसरे से रूठने पर जल्दी मान जाते हैं उनका जीवन बहुत अच्छी तरह से चलता है। जो पति-पत्नी एक दूसरे से एक बार रूठने पर मानने का नाम ही नहीं लेते उनका

- **अच्छे संबंध हमारा पोषण और विकास करते हैं, जबकि खराब संबंध हमारे स्वास्थ्य के लिए घातक और हमारी उन्नति में बाधक होते हैं। यदि हम अपने रूठे हुए स्वजनों अथवा प्रियपात्र को नहीं मनाएंगे तो इसका दुष्प्रभाव ही हमारे जीवन पर पड़ेगा।**
- **अहंकार, उपेक्षा अथवा स्वार्थ के कारण ही हमारे संबंध खराब होते हैं, जब कोई उपेक्षित अनुभव करता है तभी वह दुखी होता है अथवा रुठता है, जब हम रूठे हुए को फौरन मना लेते हैं तो सामने वाले की गलत फहमी भी फौरन ही दूर हो जाती है।**

जीवन तबाह होना निश्चित है। ऐसा समाज में देखने को भी मिलता है। वैसे भी मनाने पर न मानने का अर्थ है दोनों तरफ कटुता में लगातार वृद्धि से है। जो पति-पत्नी एक दूसरे से रूठने पर जल्दी मान जाते हैं उनके बीच स्थायी वैमनस्य और कटुता नहीं आती। यदि कोई ये समझे कि झटपट मान जाना उसकी कमजोरी को दर्शाता है तो ये सोच बिलकुल सही नहीं है। इससे तो व्यक्ति के स्वभाव की सरलता, शालीनता व विनम्रता का ही पता चलता है। जो लोग एक बार किसी से रूठने पर किसी भी तरह से मानने का नाम ही नहीं लेते वे वास्तव में अपने भाग्य से ही रूठ जाते हैं। उनके व्यवहार में जड़ता आ जाती है। जिद्दी अथवा मनाने पर किसी भी तरह से न मानने वाला व्यक्ति चाहे वो पुरुष हो या स्त्री सुखी व संतुष्ट जीवन व्यतीत नहीं कर पाते। वह जीवन में मनचाही सफलता से कोसों दूर रह जाता हैं। इसमें संदेह नहीं कि किसी से रूठने पर स्वयं भी जल्दी मान जाना हमारे व्यक्तित्व के विकास के लिए ही नहीं भौतिक उन्नति के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। कई बार किसी अवधि का मनमुटाव बहुत बड़ा अनर्थ कर देता है अतः इस स्थिति से बचना अनिवार्य है। एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि ऐसा हम स्वाभाविक रूप से करें अथवा स्वाभाविक रूप से न कर पाने पर इसके लिए बाह्य प्रयास भी करें? दोनों ही स्थितियां उत्तम हैं। चाहे हम ऊपरी तौर पर ही क्यों न मान जाएं, लेकिन इसका जो प्रभाव होगा वो वही होगा जो स्वाभाविक रूप से मानने पर होगा। स्थितियों पर इसका सकारात्मक प्रभाव ही पड़ेगा। हमने स्वाभाविक रूप से अथवा विशेष रूप से प्रयास करके किसी भी तरह से यदि एक बार भी स्थिति को सामान्य अवस्था में ला दिया तो इससे अच्छी बात हो ही नहीं सकती। जीवन में तरलता उत्पन्न करने का उद्देश्य तो स्थितियों को सुधारना ही है। स्थितियां सुधर जाएंगी तो जीवन-प्रवाह भी संतुलित हो जाएगा। इससे उपयोगी कार्यों को करना सरल हो जाएगा, जो हर हाल में अनिवार्य है। किसी बात पर रूठने के बाद यदि हम मनाने पर फौरन मान जाते हैं तो कई बार स्थितियां जीवनभर के लिए हमारे अनुकूल हो जाती हैं, जबकि न मानने पर स्थितियां हमेशा के लिए प्रतिकूल हो जाती हैं। यदि रूठे रहना ही है तो व्यक्तियों से नहीं अपितु अपने आसपास व्याप्त नकारात्मकता से रूठ जाइए और उसे दूर करके ही मानिए। यदि कोई हमसे ये कह दे कि भई हमने तो सुना था कि आप बहुत जल्दी रूठ जाते हैं और बहुत जिद्दी हैं, लेकिन आप तो बहुत विनम्र और सरल स्वभाव के हैं और फौरन सबकी बात मान लेते हैं तो ये बात हमें सचमुच अच्छी लगेगी। यदि हमारे व्यक्तित्व अथवा स्वभाव में ये गुण नहीं हैं तो भी हम उन्हें अपनाने का प्रयास करेंगे। ये रूपांतरण जैसी स्थिति हो जाएगी लेकिन ये तभी संभव होगा जब हम दूसरों की बात मानने व अपनी जिद को त्यागने में देर न करें।

नारंगी लुप्त माल्टा का भाव नहीं

उद्यान विभाग ने 2700 हैक्टेयर क्षेत्र फल में 5545 मैट्रिक टन नींबू वर्गीय फलों के उत्पादन का दावा अपनी रिपोर्ट में किया, जबकि पलायन आयोग की 2016-17 की रिपोर्ट में नींबू वर्गीय फल का क्षेत्रफल सिर्फ 831.06 हैक्टेयर और उत्पादन 4710 मैट्रिक टन दर्शाया गया है, यानी विभागीय आंकड़ों से 1869.00 हैक्टेयर क्षेत्रफल कम, यही हाल पहाड़ के बाकी जिलों का भी है।

उत्तराखंड में पैदा होने वाली संतरे की प्रजाति में एक माल्टा भी है जो सेहत के लिए बहुत लाभकारी माना गया है। इसमें एंथोसायनिन नाम का एंटीआक्सीडेंट होता है। जिसके कारण इसका रंग संतरे की तुलना में ज्यादा गहरा पीला होता है। यह खाने में थोड़ा कम खट्टा होता है। ह्रदय रोगों के जोखिम को कम करने के लिए इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। वैसे पहाड़ी क्षेत्र में पैदा होने वाले माल्टा का स्वाद हर किसी को पसंद आता है। इसे माल्टा ऑरेंज, ब्लड ऑरेंज के नाम से भी जाना जाता है। इसमें मौजूद विटामिन सी, विटामिन ए, पोटेशियम, मैंगनीज, एंथोसायनिन एंटीऑक्सडेंट, कैल्शियम, फॉइबर जैसे पोषक पाए जाते हैं। इसलिए पहाड़ में इसे फलों का राजा भी कहा जाता है। खट्टे फलों में फ्लेवोनायड्स नामक यौगिक पाया जाता है। जो सेहत के लिए बहुत लाभकारी है। इसमें एंटी डायबिटिक गुण भी होते हैं। इसके अलावा साइट्रस फ्लेवोनाइड्स ग्लूकोज और इंसुलिन को भी कंट्रोल करने में यह कारगर है। लिहाजा डायबिटीज के रोगियों के लिए माल्टा का सेवन लाभकारी साबित होता है। इन तमाम गुणों के बावजूद उत्तराखंड में माल्टा का लाभकारी मूल्य नहीं मिलना दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे उत्पादक हताश और निराश हैं। हालांकि उत्तराखंड में नवंबर-दिसंबर आते ही हर वर्ष विपणन की समस्या को लेकर पहाड़ का माल्टा चर्चाओं में आ जाता है। कभी गढ़वाल एवं कुमाऊं मंडल विकास निगम द्वारा माल्टा बेचने की बात होती है, तो कभी रुद्रप्रयाग के तिलवाड़ा में गढ़वाल मंडल विकास निगम द्वारा

डा. राजेंद्र कुकसाल
देहरादून

माल्टा की प्रोसेसिंग की बात होती है। कभी अल्मोड़ा के मटैला में कोल्ड स्टोरेज की बात होती तो कभी किसानों को कलेक्शन सेंटर पर माल्टा पहुंचाने पर 7 से 9 रुपये प्रति किलोग्राम का समर्थन मूल्य देने की बात होती है। इसी साल उत्तराखंड के माल्टा से गोवा में वाइन बनाने की खबरें आई तो उत्पादकों के चेहरे खिल उठे थे, लेकिन यह योजना कब परवान चढ़ेगी कुछ पता नहीं। इसलिए अब एक बार फिर माल्टा उत्पादकों के चेहरे पर उदासी है, क्योंकि माल्टा का लाभकारी मूल्य नहीं मिल रहा है। उत्पादकों के पास माल है, पर ग्राहक नहीं है, ग्राहक है तो मूल्य नहीं है, ऐसे में सरकार को माल्टा का लाभकारी समर्थन मूल्य देने की पहल करनी चाहिए। सिर्फ समर्थन मूल्य घोषित करना ही सरकार की जिम्मेदारी नहीं बल्कि ये उत्पादकों के लिए लाभकारी भी होना चाहिए।

इम्यूनिटी बढ़ाता है माल्टा

उत्तराखंड के पहाड़ी जिलों में 1000 से 2000 मीटर तक की ऊंचाई वाले क्षेत्र में माल्टा के बाग देखने को मिलते हैं। उद्यान विभाग के 2019-20 के फल उत्पादन के आंकड़ों के अनुसार राज्य में नींबू वर्गीय फल (माल्टा, संतरा, नींबू नारंगी आदि) के उत्पादन के तहत कुल 21,739 हैक्टेयर क्षेत्र फल है, जिससे 91,177 मैट्रिक टन का उत्पादन होता है। अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, पौड़ी, चमोली, रुद्रप्रयाग, जिलों में माल्टा का उत्पादन सबसे अधिक होता है। माल्टा का स्वाद खट्टा-मीठा रसीला है जो पौष्टिक व स्वास्थ्यवर्धक भी है। माल्टा फल औषधीय गुणों से भरपूर है इसमें विटामिन-सी प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। यह शरीर को डी टोक्स करने में भी मदद करता है। माल्टा रोग प्रतिरोधी क्षमता को बढ़ाने वाला फल भी है। इसलिए इसका सेवन इम्यूनिटी बढ़ाने का काम भी करता है।

तमाम गुणों के बावजूद उत्तराखंड में माल्टा का लाभकारी मूल्य नहीं मिलना दुर्भाग्यपूर्ण है, इससे उत्पादक हताश और निराश हैं, हालांकि उत्तराखंड में नवंबर-दिसंबर आते ही हर वर्ष विपणन की समस्या को लेकर पहाड़ का माल्टा चर्चाओं में आ जाता है।

साथ ही सर्दी, खांसी और जुकाम होने पर इसका सेवन लाभदायी होता है। माल्टा का छिलका सौंदर्य प्रसाधन में उपयोग किया जाता है। माल्टा फल, छिलके, रस और बीज के तेल से कई तरह की दवाएं बनाई जाती हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में रसायनिक खादों व दवाओं का प्रयोग कम किया जाता है इस प्रकार उत्तराखंड में उत्पादित माल्टा विशुद्ध रूप से जैविक होता है। माल्टा फल में इतने सारे स्वास्थ्य वर्धक व औषधीय गुण होने के बावजूद माल्टा उत्पादकों को इसका उचित मूल्य नहीं मिलना उत्तराखंड के सिस्टम के लिए शर्म की बात है। राज्य सरकार ने इस वर्ष माल्टा का समर्थन मूल्य निर्धारित किया है। जो दर सरकार ने तय की है उस पर किसान सरकार के कलेक्शन सेंटरों तक माल्टा लाने को तैयार नहीं है। लिहाजा अधिकतर माल्टा पिछले साल की ही तरह इस साल भी पेड़ों से गिर कर बागों में ही सड़ रहा है। इस वर्ष माल्टा को भौगोलिक संकेतांक मिला है इससे राज्य में उत्पादित माल्टा को वैश्विक पहचान मिलेगी, जिससे बाजार में यहां के उत्पादित माल्टा की मांग बढ़ने के अवसर बढ़ सकते हैं, लेकिन यह तो भविष्य की बात है, क्या पता क्या होगा?

किन्नू के सामने माल्टा की मांग कम

सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम उन्नयन योजना शुरू की गई है। इस योजना के तहत व्यक्तिगत, स्वयं सहायता समूह और एफपीओ को सूक्ष्म खाद्य उद्यमों के लिए 35 प्रतिशत या अधिकतम 10 लाख रुपये तक की सब्सिडी दी जाती है। कई युवाओं द्वारा इस योजना का लाभ लिया जा रहा है तथा माल्टा फलों की प्रोसेसिंग की जा रही है। वोकल फॉर लोकल का आह्वान मई, 2020 में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देश के नागरिकों से किया गया था। यह स्थानीय रूप से उत्पादित व निर्मित उत्पादों को बढ़ावा देने और उपयोग करने का एक आह्वान है। जिससे घरेलू व स्थानीय अर्थव्यवस्था को समर्थन मिलता है। वोकल फॉर लोकल के पीछे का विचार स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा देना, रोजगार के अवसर पैदा करना और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करना है। वोकल फॉर लोकल या लोकल के लिए वोकल को सफल बनाने के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक स्थानीय स्तर पर बने उत्पादों एवं उत्पादन की गुणवत्ता है। यदि स्थानीय उत्पाद घटिया गुणवत्ता के होंगे तो लोग उन्हें क्यों खरीदेंगे? इसलिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि स्थानीय उत्पाद या उत्पादन आयातित या अन्य जगहों के स्थानीय बाजार में बिकने वाले उत्पादों के समान गुणवत्ता वाले हों।

इसी मौसम में बाजार में बाहरी राज्यों पंजाब और हिमाचल से किन्नू व संतरा आने के कारण उत्तराखंड में उत्पादित माल्टा की मांग कम हो जाती है। जिससे पहाड़ों में उत्पादित माल्टा अच्छे दामों में नहीं बिक पाता। किन्नू, किंग और विल्लो लीफ से तैयार की गई संतरे की किस्म है इसके फल आसानी से छीले जा सकते हैं। यह फल ज्यादा मीठा व रसीला होने के साथ ही इसमें बीज भी कम होते हैं। अच्छी गुणवत्ता के कारण बाजार में इसका उचित दाम 40 से 60 रुपये प्रति किलो तक मिल जाता है। इसी प्रकार संतरा भी अच्छे दामों पर बिकता है। माल्टा की उन्नत किस्में माल्टा व्लडरेड, जाफा, वासिंगटन नेवल, पाइन एपिल, वैलैसिंया लेट आदि है। उत्तराखंड में उत्पादित अधिकतर माल्टा की कोई किस्म नहीं है यह माल्टा कामन के नाम से प्रचलित है। यहां के उत्पादित माल्टा के अधिकतर फल आकार में छोटे, कम खट्ठे-मीठे तथा अधिक बीज वाले होते हैं। माल्टा का उपयोग धूप में बैठ कर पिसे हुए नमक के साथ किया जा सकता है। माल्टा के पौधे आसानी से धरती में खुद ही निकल आते हैं, क्योंकि इनका बीज आसानी से स्थानीय प्रोसेसिंग यूनिटों में मुफ्त में या कम दामों पर उपलब्ध हो जाता है। संतरे में बीज कम होते हैं तथा इसके बीज उपलब्ध नहीं हो पाते। 80 के दशक तक उत्तराखंड के पहाड़ी जिलों में नारंगी संतरे का अच्छा उत्पादन होता था लेकिन उद्यान विभाग की उदासीनता से आज नारंगी के पुराने बाग समाप्त हो गए हैं और नए बाग विकसित नहीं हो पाए हैं। कहने का अभिप्रायः यह है कि उद्यान विभाग द्वारा कई वर्षों से योजनाओं में निम्न स्तर की माल्टा फल पौध बांटने का यह असर है। कभी-कभी तो संतरे की पौध के नाम पर योजना में माल्टा की ही पौध

- **उद्यान विभाग के 2019-20 के फल उत्पादन के आंकड़ों के अनुसार राज्य में नींबू वर्गीय फल माल्टा, संतरा, नींबू नारंगी आदि के उत्पादन के तहत कुल 21,739 हैक्टेयर क्षेत्र फल है, जिससे 91,177 मैट्रिक टन का उत्पादन हर वर्ष होता है।**
- **पंजाब और हिमाचल से किन्नू व संतरा आने के कारण उत्तराखंड में उत्पादित माल्टा की मांग कम हो जाती है, जिससे पहाड़ों में उत्पादित माल्टा अच्छे दामों में नहीं बिक पाता, किन्नू, किंग और विल्लो लीफ से तैयार की गई संतरे की किस्म है इसके फल ज्यादी स्वादिष्ट होते हैं।**

बांट दी जाती हैं, जिसका असर यह हुआ कि संतरे के बाग धीरे-धीरे कम होने लगे और माल्टा अधिक होने लगा।

आंकड़ों का खेल

उत्तराखंड उद्यान विभाग के पास फल उत्पादन के सही आंकड़े नहीं है। बिना वास्तविक आंकड़ों के सही नियोजन की बात करना बेमानी है। 2015-16 के विभागीय फल उत्पादन के आंकड़ों के अनुसार पौड़ी जिले को एक जनपद एक उत्पाद के तहत नींबू वर्गीय फलों के लिए चुना गया था। उद्यान विभाग ने 2700 हैक्टेयर क्षेत्र फल में 5545 मैट्रिक टन नींबू वर्गीय फलों का उत्पादन दर्शाया है, जबकि पलायन आयोग की 2016-17 की रिपोर्ट में नींबू वर्गीय फल का क्षेत्रफल सिर्फ 831.06 हैक्टेयर और उत्पादन 4710 मैट्रिक टन दर्शाया गया है। यानी विभागीय आंकड़ों से 1869.00 हैक्टेयर क्षेत्रफल कम यही हाल पहाड़ के बाकी जिलों का भी है। माल्टा उत्पादकों की डिमांड है कि उत्तराखंड में पैदा होने वाले माल्टा का समर्थन मूल्य बढ़ाया जाए। क्योंकि वर्तमान में कम दरों पर माल्टा उत्पादक कलेक्शन सेंटर तक माल्टा पहुंचाने में असमर्थ हैं। राज्य में कई संगठन व संस्थाएं अच्छा कार्य कर रही हैं। 2021 में मुझे हिलांस फल प्रसंस्करण ग्रोथ सेंटर 'ध्वज आजीविका स्वायत्त सहकारिता कनालीछीना पिथौरागढ़' का अवलोकन करने का अवसर मिला। यह संस्थान, एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना के तकनीकी सहयोग से चलाया जा रहा है। इस केंद्र पर जिले में हर मौसम में उत्पादित स्थानीय फलों जैसे माल्टा, बीजू आम, बीजू आंवला के साथ बुरांस एवं लिंगुडा का भी प्रोसेसिंग किया जाता है। इनसे कई तरह के पेय एवं अचार के साथ ही विभिन्न संस्थाओं एवं कंपनियों के लिए पल्प की आपूर्ति की जाती है। 'ध्वज आजीविका स्वायत्त सहकारिता कनालीछीना पिथौरागढ़' क्षेत्र के सभी स्थानीय फलों को उचित दामों पर क्रय कर प्रोसेसिंग कर तमाम लोगों को स्थाई रोजगार के साथ ही समूह से जुड़े सदस्यों को आत्मनिर्भर बना रहा है। इसी की तर्ज पर राज्य में अवस्थित राजकीय फल संरक्षण केंद्रों से कार्य लिया जा सकता है। अच्छी गुणवत्ता वाली पौध योजनाओं के तहत वितरण किया जाय। कृषि विज्ञान केंद्र जाखधार रुद्रप्रयाग के वैज्ञानिकों द्वारा माल्टा व नारंगी के न्यूसेलर सीडलिंग वाले पौधे तैयार किए जाते हैं यह प्रयास अन्य कृषि विज्ञान केंद्रों, राजकीय उद्यानों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा भी किया जा सकता है। माल्टा को गर्मियों तक सुरक्षित रखने के लिए माल्टा उत्पादित ऊंचे, ठंडे छाया दार स्थानों में सस्ती टैक्नोलॉजी वाले कूल हाउसों का निर्माण कराया जा सकता है। हर वर्ष एक करोड़ यात्री व पर्यटक उत्तराखंड में अप्रैल से लेकर अगस्त, सितंबर तक भ्रमण पर आते हैं उस समय अधिकतर यात्रा रूट्स में कोई भी स्थानीय फल नहीं दिखाई देता, माल्टा के स्थान पर गर्मियों व बरसात के मौसम में तैयार होने वाले फलों, आड़ू, प्लम, खुबानी आदि का रोपण सेब मिशन योजना की तरह कराने के प्रयास होने चाहिए। नैनीताल व रामगढ़ क्षेत्र में स्टोन फ्रूट्स (आड़ू, प्लम, खुबानी) का स्थानीय लोगों के प्रयास से अच्छा उत्पादन हो रहा है व इससे फल उत्पादक पर्यटकों को बेचकर अच्छी आय भी अर्जित कर रहे हैं। ऐसे प्रयास होते हैं तो निश्चित ही उत्तराखंड से युवाओं को रोजगार मिलेगा और पलायन पर ब्रेक लगेगा।

रहस्यमयी रुपकुंड झील

नर कंकालों की झील समुद्र तल से 16500 फीट की ऊंचाई पर है, एडवेंचर से जुड़े लोग झील का नजारा देखने आते हैं, इसी झील के पास ही नंदा देवी का मंदिर है, जिसकी उत्तराखंड में बहुत मान्यता है, प्रसिद्ध नंदादेवी राजजात यात्रा मार्ग पर त्रिशूली जैसे विशाल पर्वत की छांव में यह रुपकुंड झील है।

बाबू सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

हिमालय की तलहेटी में बसे उत्तराखंड की वादियों में झीलों का नजारा पर्यटकों का सुकून देता है। गर्मियों की छुट्टियों में जो सैलानी आते हैं वो झीलों में नौकाविहार करना नहीं भूलते, बहुत से सैलानी झीलों के किनारे बैठक मछलियों को आटे की गोलियां खिलाते हुए उनकी अटखेलियों का आनंद लेते हैं। लेकिन जरा सोचिए अगर आप किसी सुंदर झील के किनारे बैठे हैं और मछलियों के बजाय नर कंकाल तैरते हुए दिखाई दें तो क्या होगा? हर किसी के जहन में एक ही जवाब आएगा कि डर जाएगा और झील से दूर भाग जाएगा। जी हां ऐसी ही एक झील उत्तराखंड के चमोली जिले में है, जिसका नाम रूपकुंड है। नाम भले ही रूपकुंड है, लेकिन पहली बार इसमें नर कंकाल को तैरते हुए देखकर किसी के दिल में भी दहशत घर कर सकती है। शायद इसलिए ही इसे 'कंकालों की झील' भी कहते हैं। क्योंकि यहां एक जमाने से इंसानों की हड्डियां बिखरी पड़ी हैं। रहस्यों से लबालब इस झील में मछली समेत कई तरह के जीव जंतु भी है, लेकिन इनके मुकाबले नर कंकाल ज्यादा नजर आते हैं। यह नर कंकालों की झील समुद्र तल से 16500 फीट की ऊंचाई पर है, इसलिए यहां एडवेंचर से जुड़े लोग दूर-दूर से झील का नजारा देखने के लिए आते हैं। इसी झील के पास ही नंदा देवी का मंदिर भी है। जिसकी उत्तराखंड में बहुत मान्यता है। उत्तराखंड की प्रसिद्ध नंदादेवी राजजात यात्रा मार्ग पर नंदा घुंघटी और त्रिशूली जैसे विशाल हिम शिखरों की छांव में ही यह मनोरम रूपकुंड झील है। त्रिशूली शिखर की गोद में च्यूंरागली दर्रे के नीचे 12 मीटर लंबी, दस मीटर चौड़ी और दो मीटर से अधिक गहरी हरे-नीले रंग की अंडाकार यह झील साल में करीब छह माह बर्फ से ढकी रहती है। इसी झील से रूपगंगा की धारा भी फूटती है। झील की सबसे बड़ी खासियत ये है इसके चारों ओर प्राचीनकाल के नर कंकाल, विभिन्न उपकरण, कपड़े, गहने, बर्तन, चप्पल आदि मिलते हैं। इसलिए इसे रहस्यमयी झील नाम भी दिया गया है।

पौराणिक मान्यता

चमोली जिले में हर 12वें वर्ष नौटी गांव से नंदा देवी राजजात का आयोजन होता है। इस यात्रा से संबंधित कथा के अनुसार अनुपम सुंदरी हिमालय पुत्री देवी नंदा (पार्वती) जब शिव के साथ रोती-बिलखती कैलास जा रही थीं, तब मार्ग में एक स्थान पर उन्हें प्यास लगी। नंदा के सूखे होंठ देखकर शिवजी ने चारों ओर नजरें दौड़ाई, लेकिन कहीं भी पानी नहीं था। लिहाजा उन्होंने अपना त्रिशूल धरती पर मारा जिससे वहां पानी का फव्वारा फूट पड़ा। नंदा जब प्यास बुझा रही थीं, तब उन्हें पानी में एक रूपवती स्त्री का प्रतिबिंब नजर आया, जो शिव के साथ एकाकार था। नंदा को चौंकते देख शिव उनके अंतर्मन के द्वंद्व को समझ गए और बोले, यह तुम्हारा ही रूप है। तब से ही इसका नाम रूपकुंड पड़ा। यहां का पर्वत त्रिशूल व नंदा घुंघटी कहलाया। जबकि यहां से निकलने वाली जलधारा का नाम नंदाकिनी पड़ा। रूपकुंड के वैज्ञानिक पहलू को प्रकाश में लाने का श्रेय हिमालय अभियान के विशेषज्ञ एवं अंवेषक साधक स्वामी प्रणवानंद को जाता है। प्रणवानंद ने 1956 में लगभग ढाई माह और 1957 व 58 में दो-दो माह रूपकुंड में शिविर लगाकर नर कंकाल, बालों की चुटिया, चमड़े की चप्पल व बटुआ, चूड़ियां, लकड़ी व मिट्टी के बर्तन, शंख के टुकड़े, आभूषणों के अवशेष आदि वस्तुएं एकत्रित कीं। इन्हें वैज्ञानिक परीक्षण के लिए बाहर भेजा। 1957 से 1961 तक इन पर शोध व परीक्षण होते रहे। शोध के आधार पर ये नर कंकाल 650 से 750 वर्ष पुराने बताए गए। प्रणवानंद ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में रूपकुंड से प्राप्त अस्थियां आदि वस्तुओं को कन्नौज के राजा यशोधवल के यात्रा दल का माना है। जिसमें राजपरिवार के सदस्यों के अलावा अनेक दास-दासियां, कर्मचारी व सेना के जवान शामिल थे। झील के रहस्य से पर्दा उठाने वाले भी एक किस्सा सुनाते हैं। ये किस्सा प्रणवानंद के अध्ययन से मेल खाता है। यानी राजा और रानी की कहानी सदियों से सुनी व सुनाई जा रही है। माना जाता है कि राजा-रानी ने मंदिर में नंदा देवी के दर्शन करने के लिए पहाड़ चढ़ने का फैसला किया था, लेकिन वो यहां अकेले न जाकर नौकरों चाकरों को साथ ले गए। रास्ते भर धमाल-चौकड़ी मचाई गई। ये देखकर नंदा देवी गुस्सा हो गईं। उनका क्रोध बिजली बनकर राजा और रानी सहित सभी नौकर चाकरों पर गिरा और वे वहीं मौत के मुंह में समा गए। स्थानीय लोग इसे देवी नंदा के प्रकोप मानते हैं।

1942 में नंदा देवी रिजर्व के रेंजर हरिकृष्ण मधवाल दुर्लभ पुष्पों की खोज में तो अनजाने में वह झील के भीतर किसी चीज से टकरा गए, देखा तो वो नर कंकाल थे, झील की तलहटी में नर कंकालों का ढेर था, यह देख मधवाल के साथियों को लगा कि वो किसी दूसरे ही लोक में हैं।

कंकालों की झील को लेकर एक लोकमान्यता यह है कि यहां झील में तैरने वाले कंकाल उन लोगों के हैं जो किसी महामारी में एक साथ मारे गए थे, जबकि कुछ लोगों का मानना है कि ये सभी आर्मी के जवानों के कंकाल हो सकते हैं, जो बर्फ के तूफान में फंस गए होंगे और मारे गए। चूंकि यह रूपकुंड झील ग्लेशियर से बनी है इसलिए बर्फ के पानी ने उनके शरीर को सैकड़ों वर्षों तक सुरक्षित रखा होगा। दिलचस्प बात ये भी है कि नर कंकालों की यह झील साल के ज्यादातर समय बर्फ की वजह से जमी रहती है। मौसम के हिसाब से भी इस झील का आकार कभी घटता तो कभी बढ़ता रहता है। जब झील पर जमा बर्फ पिघलती है, तो यहां मौजूद इंसानी कंकाल आसानी से दिखाई देने लगते हैं। इन्हें देखकर एक बार तो कोई भी चौंक सकता है। इतना ही नहीं यह झील इतनी भयावह है कि कई बार तो कंकाल की जगह पूरे इंसानी अंग भी नजर आते, जिन्हें देखकर वास्तव में ऐसा लगता है कि उन्हें अच्छी तरह से संरक्षित किया गया होगा। इस झील में अब तक 600 से 800 इंसानी कंकाल पाए जा चुके हैं। शायद इसलिए ही पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उत्तराखंड की सरकार इसे रहस्यमयी झील बताकर प्रचारित करती है।

स्वीमी प्रणवानंद ने 1956 में ढाई माह व 1957 व 58 में दो-दो माह रुपकुंड में शिविर लगाकर नर कंकाल, बालों की चुटिया, चमड़े की चप्पल व बटुआ, चूड़ियां, लकड़ी व मिट्टी के बर्तन, शंख के टुकड़े, आभूषणों के अवशेष आदि वस्तुएं एकत्रित कीं थीं।

1942 में पहली बार देखे कंकाल

रूपकुंड झील पहाड़ी राज्य उत्तराखंड में समुद्र तल से 16500 फीट की ऊंचाई पर ग्लेशियर झील है। जब बर्फ पिघलती है, तो सैकड़ों मानव कंकाल पानी में या सतह के नीचे तैरते दिखाई देते हैं। झील की खोज पहली बार 1942 में एक ब्रिटिश फॉरेस्ट गार्ड हरिकृष्ण मधवाल ने की थी, इसी फॉरेस्ट गार्ड ने पहली बार ये कंकाल देखे थे। शुरुआत में यह अनुमान लगाया गया था कि यह अवशेष जापानी सैनिकों के होंगे, जो दूसरे विश्व युद्ध में इस रास्ते से जाते समय यहां फंस गए होंगे। 1942 में जब पहली बार ब्रिटिश फॉरेस्ट गार्ड ने बड़ी संख्या में कंकाल देखे तब अंग्रेजों ने तुरंत एक टीम को यह पता लगाने के लिए भेजा कि ये कंकाल किसके हैं। जांच करने पर पता चला कि लाशें जापानी सैनिकों की नहीं हो सकतीं, क्योंकि ये काफी पुरानी हो चुकी हैं। हालांकि कंकालों के रहस्य का पता लगाने के लिए कई बार नेशनल और इंटरनेशनल प्रयास हुए। इंटरनेशनल स्तर पर हुए एक अध्ययन के अनुसार ये कंकाल सिर्फ भारत के ही नहीं, बल्कि ग्रीस, साउथ ईस्ट एशिया के लोगों के भी हैं। एक नई रिसर्च बताती है कि यह सभी कंकाल अलग अलग नस्लों के हैं। इनमें महिला और पुरुष दोनों के कंकाल शामिल हैं। देश और विदेश के तमाम वैज्ञानिक इन कंकालों पर रिसर्च कर रहे हैं। नेचर कम्यूनिकेशंस पोर्टल पर छपी नई रिसर्च में पता चला है कि इन कंकालों का इतिहास क्या है? इस शोध में भारत के शोधकर्ता भी शामिल थे, उनके अनुसार इस झील पर इससे पहले कभी ऐसी रिसर्च नहीं की गई थी। शोध में पाया गया कि इस इलाके में भूस्खलन बहुत होते हैं। इसलिए ये भूस्खलन की चपेट में आई बस्ती के लोगों के भी कंकाल हो सकते हैं। 1960 के दशक में हुई एक महत्वपूर्ण रिसर्च में 71 कंकालों के टेस्ट किए गए। इनमें से कुछ की कार्बन डेटिंग भी की गई। कुछ का डीएनए टेस्ट किया गया। कार्बन डेटिंग टेस्ट से पता लगाने की कोशिश की गई कि मानव कंकाल का अवशेष कितना पुराना है? इस टेस्ट में पता चला कि ये सब कंकाल एक समय के नहीं हैं। ये सभी अलग-अलग समय के हैं। साथ ही अलग-अलग नस्लों के भी हैं। इनमें महिलाओं और पुरुषों दोनों के कंकाल हैं। अधिकतर जो कंकाल मिले हैं, उन पर की गई रिसर्च से पता चला कि जिन व्यक्तियों के ये कंकाल थे, वे अधिकतर स्वस्थ थे। रिसर्च में ये भी पाया गया कि इन कंकालों का आपस में कोई रिश्ता नहीं था, क्योंकि पहले कंकालों के इस समूह को एक परिवार का माना गया था। किंतु रिसर्च में ये बात साफ हो गई कि ये लोग एक परिवार के नहीं थे, क्योंकि इनके डीएनए के बीच कोई भी समानता नहीं पाई गई।

7वीं शताब्दी के नर कंकाल

जांच में इन कंकालों में कोई बैक्टीरिया या बीमारी पैदा करने वाला वायरस नहीं मिला है। इसका मतलब ये हुआ कि ये किसी बीमारी या महामारी की चपेट में आकर नहीं मरे थे। इनमें से ज्यादातर कंकाल भारत और उसके आस-पास के देशों के हैं। यानी साउथ ईस्ट एशिया और ग्रीस के, एक कंकाल चीन का भी बताया जा रहा है। इसके अलावा ये सभी कंकाल एक साथ या एक समय पर झील में नहीं पहुंचे। इनमें भारत और आस-पास के इलाकों वाले कंकाल यहां 7वीं से 10वीं शताब्दी के बीच के हैं। वहीं ग्रीस और आस-पास के इलाके वाले कंकाल यहां 17वीं से 20वीं शताब्दी के बीच के पाए गए हैं। चीन का कंकाल भी बाद के ही समय का पाया गया। इससे ये साफ है कि रूपकुंड में नजर आने वाले कंकाल अलग-अलग हादसों का शिकार हुए हैं। वो हादसे क्या थे, इसके बारे में साफ जानकारी नहीं है। कुछ कंकालों की हड्डियों में फैक्चर पाए गए हैं, जो गिरने-पड़ने से हो सकते हैं। इससे ये अंदाजा लगाया जा सकता है कि शायद ये लोग किसी तूफान में फंसे थे, लेकिन ये सभी बातें साबित नहीं हुई हैं। 2004 में भारतीय और यूरोपीय वैज्ञानिकों के एक दल ने रूपकुंड यानी कंकालों की झीला का दौरा किया, ताकि कंकालों के बारे में और अधिक जानकारी मिल सके। उसके बाद हैदराबाद, पुणे और लंदन के वैज्ञानिकों ने यह निर्धारित किया कि जिन लोगों के कंकाल है वो किसी बीमारी से नहीं बल्कि अचानक हुई ओलावृष्टि अथवा बर्फीली आंधी से मरे हैं। रूपकुंड में नर कंकाल की खोज सबसे पहले 1942 में नंदा देवी रिजर्व के रेंजर हरिकृष्ण मधवाल ने की थी। मधवाल दुर्लभ पुष्पों की खोज में यहां आए थे। इसी दौरान अनजाने में वह झील के भीतर किसी चीज से टकरा गए। देखा तो वह नर कंकाल था। झील के आसपास और तलहटी में भी नर कंकालों का ढेर मिला। यह देख रेंजर मधवाल के साथियों को लगा मानो वे किसी दूसरे ही लोक में आ गए हैं। उनके साथ चल रहे मजदूर तो इस दृश्य को देखते ही भाग खड़े हुए थे। तब से लगातार यहां मौत की वजह जानने का यह सिलसिला जारी है। इसी रूपकुंड झील पर 2021 में बीबीसी ने भी अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की थी जिसमें बताया गया था कि अब तक यहां 600-800 लोगों के कंकाल पाए जा चुके हैं। बर्फ में दबे रहने के कारण उनमें से कुछ पर अब भी मांस लगा मिला है। कुल मिलाकर अब तक हुई रिसर्च में कुछ असमानताएं होने से यह साफ नहीं है कि जिन लोगों के नर कंकाल मिले हैं उनकी मौत कैसे हुई और इस क्षेत्र में कैसे इकट्ठा हुए? फिर नर कंकाल भारत के ही नहीं बल्कि ग्रीस और साउथ ईस्ट एशिया, चीन के लोगों के हैं। इनमें महिला और पुरुष दोनों हैं। सवाल ये भी कि अलग अलग क्षेत्र के लोग यहां कैसे और क्यों आए होंगे? ●

वृद्ध से बच्चे तक 'जुड़ा डाक-घर'

कुछ दशक पहले तक किसी भी शहर में रेलवे स्टेशन, बस अड्डे की तरह डाक-घर को बच्चा-बच्चा जानता था। हजारों की आबादी में किसी के नाम से उसके घर का पता डाकिये से मालूम पड़ जाता था। डाकिये शहर और गांव की गलियों में घर-घर घूमते हुए दिखते थे। अब चिट्ठी किसी घर में मुश्किल से देखने को मिलेगी।

कमल कांत शर्मा

ज्ञान के क्षेत्र में निरंतर शोध और नई तकनीक का विकास होने से रहन-सहन और जीवन की अन्य गतिविधियों में बदलाव आ रहा है। सरकारी विभागों की कार्यशैली भी प्रभावित हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी ने सुविधाओं के साथ बहुत से कार्यों और उन्हें करने वालों की पहचान को विलुप्त करके इतिहास के पन्नों में समेट दिया है, इन्हीं में पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय-पत्र, डाक लिफाफे, मनीऑर्डर और इनका वितरण करने वाले डाकिये हैं। पुरानी फिल्मों में डाकिये का पात्र महत्वपूर्ण होता था। फिल्मी गानों में चिट्ठी का उल्लेख होता है। उपन्यास और कहानियों में भी चिट्ठी और डाकिये का भावनात्मक विवरण मिलता है। चिट्ठी-पत्री जीवन का अहम अंग था। चिट्ठी लोगों की भावनाओं से जुड़ी थी। चिट्ठी लेखन साहित्य में अलग शैली और विधा है। पारिवारिक रिश्तों के अनुरूप चिट्ठी में अभिवादन सूचक शब्द, संबोधन और शब्दावली होती है। चिट्ठी से लिखने वाले की योग्यता का अनुमान लगा लिया जाता था। चिट्ठी लेखन में स्वाभाविक रूप से त्रुटि अथवा भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं हो पाने पर चुटकुले चर्चित हैं। मुहाबरों का भी चिट्ठी लेखन में प्रसंग के अनुरूप प्रयोग किया जाता था। प्रतियोगी परीक्षा के लिए लेटर राइटिंग की पुस्तकें प्रकाशित की जाती थीं। चिट्ठी लिखने की योग्यता के आधार पर ही सरकारी व निजी क्षेत्र में नौकरी मिल जाती थी। चिट्ठी पहुंचाने का कार्य डाक-घर और डाकिये करते थे। विश्व के हर देश में डाक-घर की महत्वपूर्ण भूमिका थी और डाकिये की पहचान अन्य किसी भी कर्मचारी से अधिक थी। जिन घरों में डाकिये चिट्ठी पहुंचाते थे, उस परिवार से अपनत्व की भावना होती थी और चाचा, मामा तथा अन्य संबंध का संबोधन तक किया जाता था। गांव-गांव और मोहल्लों में डाक-घर हैं, लेकिन अब अप्रासंगिक से होते जा रहे हैं। कुछ दशक पहले तक किसी भी शहर में रेलवे स्टेशन, बस अड्डे की तरह डाक-घर को बच्चा-बच्चा जानता था। हजारों की आबादी में किसी के नाम से उसके घर का पता डाकिये से मिल जाता था। डाकिये शहर और गांव की गलियों में घूमते हुए दिखते थे। अब डाकियों की संख्या नगण्य रह गई है। हालांकि बैंकिंग का काम डाक विभाग को सौंपने से लोग डाक-घर जाते हैं। दूरस्थ गांवों में बैंक नहीं हैं, लेकिन बैंकिंग का कार्य डाक-घर कर रहे हैं। डाक-घरों में बैंक की अपेक्षा जल्द लोगों का कार्य हो जाता है। समाज के निम्न और मध्यम वर्ग, महिला व सेवानिवृत्त वृद्ध लोग डाक-घर को सुविधाजनक मानते हैं। शहर के प्रधान डाक-घर को डिजिटल इंडिया मिशन के तहत ई-सर्विस का कार्य सौंपने से पूरे शहर के लोग पहुंचेंगे और भीड़ के कारण असुविधा से इन्कार नहीं किया जा सकता है। यदि गांव और मोहल्लों के डाक-घरों को भी तकनीक से आधुनिक किया जाये तो सुविधाजनक होगा।

पोस्टकार्ड का है डेढ़ सदी से ज्यादा पुराना इतिहास

तमाम राजनेताओं से लेकर साहित्यकारों व आंदोलनकारियों ने पोस्टकार्ड का बखूबी प्रयोग किया है। सबका अपना वही पोस्टकार्ड पहली अक्टूबर, 2023 को वैश्विक स्तर पर 154 साल का हो गया। दुनिया में पहला पोस्टकार्ड एक अक्टूबर, 1869 को ऑस्ट्रिया में जारी किया गया था। इसके पीछे की कहानी बड़ी रोचक है। डाक विभाग के सेवानिवृत्त अधिकारियों तथा इतिहास के विद्वानों के अनुसार पोस्टकार्ड का विचार सबसे पहले ऑस्ट्रियाई प्रतिनिधि कोल्बेंस्टीनर के दिमाग में आया था, जिन्होंने इसके बारे में वीनर न्योस्टॉ में सैन्य अकादमी में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर डॉ. एमैनुएल हर्मेन को बताया। उन्हें यह विचार काफी आकर्षक लगा और उन्होंने 26 जनवरी, 1869 को एक अखबार में इसके बारे में लेख लिखा। ऑस्ट्रिया के डाक मंत्रालय ने इस विचार पर बहुत तेजी से काम किया और पोस्टकार्ड की पहली प्रति एक अक्टूबर, 1869 में जारी की गई। यहीं से पोस्टकार्ड के सफर की शुरुआत हुई। दुनिया का यह प्रथम पोस्टकार्ड पीले रंग का था। इसका आकार 122 मिलीमीटर लंबा और 85 मिलीमीटर चौड़ा था। इसके एक तरफ पता लिखने के लिए जगह छोड़ी गई थी, जबकि दूसरी तरफ संदेश लिखने के लिए खाली जगह छोड़ी गई। भारत में पहला पोस्टकार्ड 1879 में जारी किया गया। हल्के भूरे रंग में छपे इस पहले पोस्टकार्ड की कीमत तीन पैसे थी और इस पर 'ईस्ट इंडिया पोस्टकार्ड' छपा था। बीच में ग्रेट ब्रिटेन का राजचिह्न मुद्रित था और ऊपर की तरफ दाएं कोने में लाल-भूरे रंग में छपी ताज पहने साम्राज्ञी विक्टोरिया की मुखाकृति थी। भावनाओं और सूचना का यह माध्यम लोगों को इतना पसंद आया कि साल की पहली तिमाही में ही लाखों रुपये के पोस्टकार्ड बेचे गए थे। उस जमाने की इस रकम का अनुमान वर्तमान में खरबों रुपये हो सकता है। जरूरत और समय के साथ पोस्टकार्ड में बदलाव भी होते रहे। डाकघरों में चार तरह के पोस्टकार्ड मिलते थे- मेघदूत पोस्टकार्ड, सामान्य पोस्टकार्ड, प्रिंटेड पोस्टकार्ड और कम्पटीशन पोस्टकार्ड। इन चारों पोस्टकार्ड की लंबाई 14 सेंटीमीटर और चौड़ाई 9 सेंटीमीटर होती है।

> **पहले कूरियर कंपनियों ने डाक विभाग का काम छीना। अब तो चिट्ठी-पत्री भेजने की परम्परा ही समाप्त जैसी हो गई है। चिट्ठी लिखने की जरूरत मोबाइल फोन से पूरी हो जाती है। डाक विभाग सिर्फ चिट्ठी भेजने का ही काम नहीं करते थे, मनीऑर्डर के जरिये धन के आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। अब यह काम अधिकतर डिजिटल बैंकिंग से हो जाता है।**

साहित्य में एक विधा रही है चिट्ठी लेखन

'कम लिखे को ज्यादा समझना' की तर्ज पर पोस्टकार्ड न सिर्फ व्यक्तिगत बल्कि तमाम सामाजिक, साहित्यिक, धार्मिक, राजनैतिक आंदोलनों का गवाह रहा है। आंदोलन के दौरान सूचना को जन-जन तक पहुंचाने का काम भी करता रहा है। क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के पत्र इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं। पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा जेल से अपनी पुत्री इंदिरा गांधी को लिखी चिट्ठियां संग्रहित करके पुस्तक प्रकाशित की गई और असंख्य पाठकों की पसंद रही है। पोस्टकार्ड का खुलापन पारदर्शिता का परिचायक है तो इसकी सर्वसुलभता लोकतंत्र को मजबूती देती रही है। आज भी तमाम आंदोलनों का आरम्भ पोस्टकार्ड अभियान से ही होता है। ई-मेल, एसएमएस, फेसबुक, ट्विटर और व्हाट्सएप ने सम्प्रेषण की परिभाषा भले ही बदल दी हो, पर पोस्टकार्ड अभी भी आम आदमी की पहचान है। चिट्ठी से अभी भी बुजुर्गों का भावनात्मक लगाव है।

त्योहार और रिश्तों का जरिया रहा डाक-घर

परिवार की राजी-खुशी के आदान-प्रदान के साथ ही डाक-घर त्योहार और रिश्तों की प्रासंगिकता का जरिया रहा है। भाई-बहन के अगाध स्नेह का प्रतीक रक्षा बंधन का पर्व धर्म और जाति की संकीर्णता से परे रहा है और आज भी है। डाक-घर हर साल कच्चे धागे के इस अटूट रिश्ते के लिए राखी पहुंचाने का काम करता है। राखी रखकर समय से पोस्ट बॉक्स में डाल दें तो डाक विभाग रक्षा बंधन से पहले बहन के स्नेह को भाई तक पहुंचाने को प्राथमिकता देता है। कुछ साल पहले तक युवाओं के भविष्य को संवारने में डाक-घर की अहम भूमिका हुआ करती थी। सरकारी विभागों तथा निजी क्षेत्र में आवेदन करने वालों को लिखित परीक्षा तथा साक्षात्कार की सूचना देने, नियुक्ति पत्र पहुंचाकर युवाओं के परिवार में खुशी का संचार करने का काम डाकिये किया करते थे। विवाह, नामकरण तथा अन्य कार्यक्रमों के निमंत्रण पहुंचाने का काम भी डाक-घर करते थे। बहुत से लोग आज भी स्पीड पोस्ट से निमंत्रण भेजते हैं।

पहाड़ पर प्रचलित थी मनीऑर्डर अर्थव्यवस्था

देवभूमि उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मनीऑर्डर पर टिकी थी। देवभूमि के अधिकतर लोग सेना व अन्य सुरक्षा बलों में कार्यरत हैं। जवान अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए हर माह वेतन का कुछ हिस्सा मनीऑर्डर से भेजते थे। लोग मनीऑर्डर का बेसब्री से इंतजार करते थे। अब यह काम डिजिटल तकनीक के जरिये हो रहा है।

बांटने के साथ ही चिट्ठी पढ़ते और लिखते थे डाकिये

चार-पांच दशक पहले साक्षरता का स्तर बहुत कम था। निरक्षर तथा बहुत कम पढ़े-लिखे लोगों को 'अंगूठा टेक' कहा जाता था, ऐसे लोग चिट्ठी पढ़ नहीं पाते थे। डाकिये उनको चिट्ठी देने से पहले पढ़कर भी सुना दिया करते थे। इसके बाद उनकी चिट्ठी लिख कर प्रेषित कर देते थे। कुछ लोग एक पोस्टकार्ड लिखते थे और उससे जुड़ा एक पोस्टकार्ड अपना पता लिखा भेजते थे। ऐसे पोस्टकार्ड को 'जवाबी पोस्टकार्ड' कहा जाता था। बिना लिखे पोस्टकार्ड पर लोग अपनी बात लिखकर भेज देते थे। व्यावसायिक प्रतिष्ठान अपने उत्पाद की विशेषताएं प्रिंटिंग प्रेस में छपवाकर पोस्टकार्ड का इस्तेमाल विज्ञापन के तौर पर करते थे।

पोस्ट एंड टेलीग्राफ डिपार्टमेंट बन गया इतिहास

डाक-घर पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय-पत्र, डाक लिफाफा बेचने और गंतव्य तक भेजने तथा मनीऑर्डर का काम करते थे। डाक-घर के साथ ही तार-घर भी हुआ करते थे। इस विभाग को संयुक्त रूप से पोस्ट एंड टेलीग्राफ डिपार्टमेंट (पीएंडटी)कहा जाता था। चिट्ठी गंतव्य तक रेलगाड़ी और बस से पहुंचाई जाती थी। दूरी के अनुसार कई दिन लग जाते थे। टेलीग्राम अर्थात तार जल्द पहुंच जाता था। सांकेतिक ध्वनि और खम्भों पर तार के जरिये टेलीग्राम में मात्र कुछ शब्द से संदेश भेजा जाता था। सेना, प्रशासन टेलीग्राम का उपयोग करते थे। किसी अनहोनी की सूचना ही जन सामान्य के लिए टेलीग्राम से भेजी जाती थी। देवभूमि उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र के अधिकतर लोग सेना तथा अन्य सुरक्षा

1 चिट्ठी-पत्री था जिंदगी का अहम हिस्सा

2 इतिहास के पन्नों में सिमट गये पोस्टकार्ड व अंतर्देशीय-पत्र

3 डाकिये से हुआ करते थे परिवार जैसे रिश्ते

बलों में कार्यरत हैं। यदि पर्वतीय क्षेत्र में टेलीग्राम पहुंचता था तो लोग घबरा जाते थे। टेलीग्राफ विभाग करीब दो दशक पहले बंद हो गये, इसी के साथ तार-घर और पीएंडटी डिपार्टमेंट इतिहास बन गये।

कबूतर जा जा, पहले प्यार की पहली चिट्ठी...

व्यवसायी मदन मोहन अग्रवाल को सूचना संप्रेषण में आये बदलाव की याद ताजा है। 'कबूतर जा जा, पहले प्यार की पहली चिट्ठी और डाकिया डाक लाया...' जैसे गाने हमने सुने हैं। कबूतर को सम्प्रेषण का माध्यम माना जाता था। एक से दूसरी जगह सूचना देने के लिए घोड़ों का इस्तेमाल होता था। गांवों में नाई संदेशवाहक होते थे। समाज में बदलाव आने पर डाक विभाग की व्यवस्था हुई। ब्रिटिश शासन की गुलामी के दौरान भारत में वारेन हेस्टिंग ने कलकत्ता में पहला पोस्ट ऑफिस वर्ष 1852 में शुरू किया। लार्ड डलहौजी ने वर्ष 1854 में डाक विभाग की व्यवस्था की। कुछ वर्ष पहले तक शहर और गांव में चौराहे पर पोस्ट बॉक्स और खाकी वर्दी में घूमते डाकिये दिखते थे। चिट्ठी आने पर कुशलक्षेम पता लगने पर लोगों के चेहरे खिल जाते थे। टेलीग्राम (तार) आने पर चिंता हुआ करती थी। डाक देर से पहुंचने पर अखबार में समाचार को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता था और शीर्षक 'सालभर में पहुंचे अढ़ाई कोस' हुआ करता था। कानूनी रूप से रजिस्टर्ड डाक का उपयोग किया जाता था। न्यायालय में रजिस्टर्ड डाक की पावती मान्य थी। अब जमाना बदल गया है। सूचना प्रौद्योगिकी ने चिट्ठी-पत्री को इतिहास में समेट दिया।

ई-सर्विसिंग की जिम्मेदारी निभा रहे डाकघर

हल्द्वानी प्रधान डाकघर के पोस्टमास्टर गौरव कुमार जोशी ने बताया कि सरकार ने डाक-घरों को बंद करने की जगह नई जिम्मेदारी सौंपने का निर्णय किया है, जिससे समाज के सभी वर्गों को सुविधा होगी। डिजिटल इंडिया मिशन के तहत ई-सर्विस जन-जन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी डाक विभाग को सौंपी गई है। इससे केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ लोगों को मिल रहा है। शहर के प्रधान डाक-घर में सिंगल विंडो पर पेन कार्ड, आधार कार्ड बनाने तथा अपडेट करने का काम होगा। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, पीएम श्रम योगी जनधन पेंशन योजना आदि का कार्य डाक-घर करेंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आधार कार्ड के माध्यम से किसी भी बैंक खाते से डाकघर से धनराशि निकाली जा सकती है। सरकार के इस निर्णय से डाक विभाग को एक तरह से नया जीवन मिला।

सिर्फ यादों में जूनियर महमूद

सिंगर महमूद ने अपनी बेटी की बर्थडे पार्टी में नईम को बुलाया था, इस पार्टी में नईम ने 'हम काले हैं तो क्या हुआ दिलवाले हैं...' गाने पर डांस किया था, नईम के शानदार डांस और एक्सप्रेशन से सिंगर महमूद ने इंप्रेस होकर उन्हें जूनियर महमूद का नाम दिया था।

हिंदी सिनेमा के मोस्ट पॉपुलर और कॉमेडी किंग जूनियर महमूद अपने जमाने में काफी फेमस रहे हैं। 'मेरा नाम जोकर', 'परवरिश', 'हाथी मेरे साथी' जैसी बेहतरीन फिल्मों से जूनियर महमूद ने सभी के दिलों में अपनी अलग ही जगह बनाई थी। इस अभिनेता का असली नाम जूनियर महमूद नहीं, बल्कि नईम सैय्यद था। नईम को उनकी पहली फिल्म के बाद जूनियर महमूद नाम मिला था। हालांकि इस नाम के पीछे भी एक खास कारण था। नईम सैय्यद का जन्म 1956 में हुआ था। सिर्फ 9 साल की उम्र में ही 'मोहब्बत जिंदगी में है' फिल्म से उन्होंने अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत की। इसके बाद 1968 में रिलीज हुई फिल्म 'सुहाग की रात' में भी नईम को सिंगर महमूद के साथ काम करने का मौका मिला। इस फिल्म से उनकी एक्टिंग ने हर किसी का दिल जीत लिया था। मीडिया रिपोर्टस के अनुसार फिल्म के बाद सिंगर महमूद ने अपनी बेटी की बर्थडे पार्टी में नईम को बुलाया था। इस पार्टी में उन्होंने 'हम काले हैं तो क्या हुआ दिलवाले हैं...' गाने पर डांस किया था। नईम के शानदार डांस और एक्सप्रेशन से महमूद ने इंप्रेस होकर उन्हें जूनियर महमूद का नाम दिया था। नईम ने भी इसी नाम के साथ फिल्मों में अपना करियर बनाया। इतना ही नहीं, जूनियर महमूद को पहली फिल्म भी काफी अतरंगी अंदाज में मिली थी। दरअसल जूनियर महमूद के बड़े भाई फिल्मों के सेट पर फोटोग्राफी का काम करते थे। बचपन से ही जूनियर महमूद फिल्म के सेट पर जाने लगे थे। जब वे एक बार अपने भाई के साथ फिल्म के सेट पर गए, तो वहां किसी फिल्म के लिए चाइल्ड एक्टर का सीन फिल्माया जा रहा था। लेकिन चाइल्ड एक्टर ठीक से डायलॉग नहीं बोल पा रहा था, तभी नईम ने इस पर कमेंट किया कि इतना सा नहीं बोला जा रहा। इस पर नईम को जवाब देते हुए कहा गया कि अगर तुम बोल सकते हो, तो तुम्हें यह मौका मिलेगा। इसके बाद से ही 9 साल की उम्र में जूनियर महमूद को फिल्म 'मोहब्बत जिंदगी है' में काम मिला।

बचपन से ही जूनियर महमूद फिल्म के सेट पर जाते थे, एक बार फिल्म के सेट पर गए, तो वहां चाइल्ड एक्टर का सीन फिल्माया जा रहा था, लेकिन चाइल्ड एक्टर ठीक से डायलॉग नहीं बोल पा रहा था, तभी नईम ने इस पर कमेंट किया कि इतना सा नहीं बोला जा रहा।

अरुण सिंह
मुंबई ब्यूरो

कैंसर से जंग हार गए जूनियर महमूद

दशकों तक दर्शकों को हंसाने वाले एक्टर जूनियर महमूद, 67 साल की उम्र में कैंसर से जंग हार गए और 14 दिसंबर को दुनिया को अलविदा कह गए। जूनियर महमूद को दो हफ्ते पहले ही पता चला था कि उन्हें स्टेज 4 का कैंसर है। यह कैंसर पेट से लेकर उनके लिवर, फेफड़ों और आंत तक फैल गया था। उनके करीबी दोस्त और एक्टर मास्टर राजू ने मीडिया को बताया कि डॉक्टर्स ने यहां तक कह दिया था कि अब जूनियर महमूद के पास बहुत से बहुत 40 दिनों का वक्त है। फिर भी उन्होंने कैंसर से जंग लड़ी, लेकिन 14 दिसंबर की रात उनकी तबीयत ज्यादा खराब हो गई और उनका निधन हो गया। उनकी एक ही ख्वाहिश थी कि जब मैं मरूं तो दुनिया बोले कि बंदा अच्छा था बस। सोशल मीडिया पर एक वीडियो भी वायरल हो रहा है, जिसमें जूनियर महमूद कार में बैठे दिखाई दे रहे हैं। मीडिया ने बातचीत में उनसे जब पूछा कि आपने कई फिल्मों में काम किया है। आप ऊपर वाले से क्या ख्वाहिश रखते हैं? इसके जवाब में जूनियर महमूद ने यही कहा 'मैं सीधा-साधा जूनियर आदमी हूं। आपने ये जान ही लिया होगा। बस, मैं मरूं तो दुनिया बोले कि बंदा अच्छा था। चार आदमी ये बोल दे तो समझ लीजिए आप जीत चुके हैं। गुजरे जमाने के कॉमेडियन और उम्दा एक्टर जूनियर महमूद के निधन की खबर सुनकर उस दौर के उनके सारे फैंस उदास हैं। हालांकि बीमारी की हालत में जूनियर महमूद ने अभिनेता जीतेंद्र और सचिन पिलगांवकर से मिलने की इच्छा जताई थी, उनकी ख्वाहिश पूरी करने के लिए अभिनेता जीतेंद्र उनसे मिलने पहुंचे तब उनकी तस्वीर दुनिया के सामने आई और उनका हाल देखकर लोग दहल गए थे। बाद में सचिन पिलगांवकर और कॉमेडियन और अभिनेता जॉनी लीवर ने भी जूनियर महमूद से मुलाकात की। इसके बाद दोनों अभिनेता रोजाना जूनियर महमूद से मिलने के लिए अस्पताल आते-जाते रहते थे। जॉनी लीवर ने उनके इलाज में भी मदद की।

भावुक हुए जितेंद्र

जूनियर महमूद से मिलकर अस्पताल से बाहर आए जितेंद्र ने मीडिया को बताया कि जब वह अपने दोस्त से मिलने पहुंचे तो उन्हें पहचान नहीं सके। यह दिल तोड़ने वाला था। परिवार ने बताया कि बीमारी के कारण जूनियर महमूद का 36 किलो वजन कम हो गया है। वह बहुत दर्द में जी रहे थे। वहां उनके साथ पत्नी और बच्चे भी थे। यह सब देखकर जितेंद्र का दिल पसीज गया और वह भावुक हो गए। जितेंद्र और जूनियर महमूद ने नासिर हुसैन की फिल्म कारवां में साथ काम किया था। तब सेट पर आशा पारेख और जितेंद्र के साथ जूनियर ने खूब समय बिताया था और यहीं से जितेंद्र और जूनियर महमूद की दोस्ती गहरी हुई थी। जूनियर महमूद की पत्नी का नाम लता है। जब जितेंद्र आखिरी वक्त में अपने दोस्त से मिलने गए, तब उन्होंने रोती हुई लता को भी संभाला। इस दौरान खुद जितेंद्र की आंखों से भी आंसू छलक उठे थे। जितेंद्र ने बताया कि उन्होंने लता के साथ सुहागन फिल्म में काम किया था। तब वह बेहद कम उम्र की प्यारी सी लड़की थीं। करीब 40 साल पहले लता ने ही जितेंद्र को बताया था कि वह जूनियर महमूद से शादी करने वाली हैं। परिवार में पत्नी के अलावा उनके दो बेटे, बहू और एक पोता भी है। 70 के दशक में जूनियर महमूद एक बाल कलाकार के तौर पर अपने करियर के शिखर पर थे। उनकी पॉपुलैरिटी और कमाई का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि तब उन्होंने विदेश से अपने लिए एक कार इम्पोर्ट करवाई थी। तब मुंबई में उनको मिलकार सिर्फ 12 लोग थे, जिनके पास इम्पोट कार थी।

250 फिल्मों में काम किया

जूनियर महमूद ने अपने करियर के दौरान जीतेंद्र और सचिन पिलगांवकर दोनों के साथ ही कई फिल्मों में काम किया था। सचिन पिलगांवकर और जूनियर महमूद ने 'बचपन', 'गीत गाता चल' और 'ब्रह्मचारी' जैसी फिल्मों में साथ काम किया था। फिल्मों के अलावा वह देश और विदेशों में कई स्टेज शो का हिस्सा रहे। अपने पांच दशक से ज्यादा लंबे करियर में जूनियर महमूद ने 250 से ज्यादा फिल्मों में काम कर अपनी एक्टिंग और कॉमेडी का लोहा मनवाया था। उन्होंने अपने फिल्मी करियर में 'कटी पतंग', 'मेरा नाम जोकर', 'परवरिश' और 'दो और दो पांच' समेत कई हिट फिल्मों में काम किया। जूनियर महमूद ने अपने करियर की शुरुआत एक चाइल्ड आर्टिस के रूप में फिल्म 'नौनिहाल' से की थी, जिसमें संजीव कुमार, बलराज साहनी और इंद्राणी मुखर्जी जैसे दिग्गज एक्टर शामिल थे।

दर्शकों को हंसाने वाले एक्टर जूनियर महमूद, 67 साल की उम्र में कैंसर से जंग हार गए और 14 दिसंबर को दुनिया को अलविदा कह गए, जूनियर महमूद को दो हफ्ते पहले ही पता चला था कि उन्हें स्टेज 4 का कैंसर है।

1967 में रिलीज हुई 'नौनिहाल' से लेकर अब तक नईम सैय्यद ने जूनियर महमूद के नाम से ही इंडस्ट्री में अपनी अलग पहचान बनाई थी। उन्होंने कई मराठी फिल्में भी काम किया था। ब्रह्मचारी अनाथ आश्रम के बच्चों पर आधारित इस फिल्म में जूनियर महमूद ने बच्चे का किरदार अदा किया। उनकी एक्टिंग इतनी उम्दा थी कि वो ढेरों बच्चों के बीच अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहे थे। कारवां फिल्म में जूनियर महमूद ने जितेंद्र के साथ काम किया था। यहीं से दोनों के साथ गहरा रिश्ता भी बना। फिल्म में इनके अलावा आशा पारेख और अरूणा ईरानी भी थीं। आप की कसम मूवी में राजेश खन्ना और मुमताज जैसे दिग्गज कलाकार थे। इस फिल्म में जूनियर महमूद ने कलुआ नाम का किरदार अदा किया और दिग्गजों के बीच अपनी छाप छोड़ी। परवरिश में अमिताभ बच्चन और विनोद खन्ना जैसे दिग्गज कलाकार और साथ में नीतू सिंह तथा शबाना आजमी भी फिल्म में थे। इस फिल्म में जूनियर महमूद को अपना काम दिखाने का मौका मिला। इस बार भी वो भीड़ का हिस्सा थे लेकिन उनकी एक्टिंग को अनदेखा करना मुश्किल था। हरे रामा हरे कृष्णा देवानंद की इस फिल्म में जूनियर महमूद खास रोल में दिखाई दिए। इस फिल्म में उनके किरदार का नाम मछीना था।

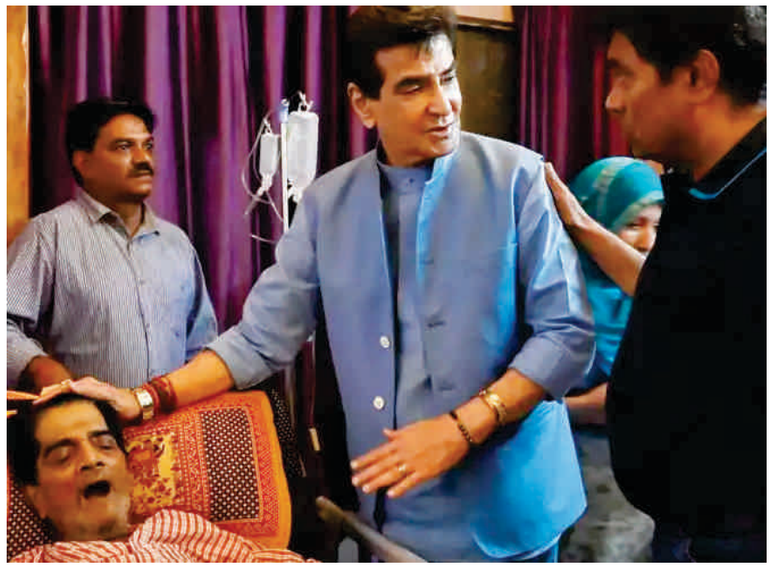

मासिक राशिफल

पंडित उपेन्द्र कुमार उपाध्याय
9897450817, 9897791284
ज्योतिषाचार्य, आयुर्वेदरत्न, कथावाचस्पति, यज्ञानुष्ठान विशेषज्ञ
अध्यक्ष-श्री शिवशक्ति ज्योतिष पीठ, बदायूं
निवास प्रभातनगर, निकट इंद्राचौक, सिविल लाइंस, बदायूं (यूपी)

मेष:-

इस माह परिवार में मंगल कार्य का आयोजन होगा, बुद्धि में नवीनता का उदय होगा। कठोर परिश्रम से सफलता मिलेगी, लाभदायी अवसर की प्राप्ति होगी, नौकरी में नए पदाधिकार का लाभ होगा, बच्चों के स्वास्थ्य की चिंता होगी। रिश्तेदारों का आवागमन होगा, भूमि भवन का योग बनेगा। जीवन साथी से अनबन हो सकती है। यात्रा के योग बन रहे हैं, जिससे खर्च बढ़ेगा। यात्रा में सामान की सुरक्षा करे और सावधानी बरतें। उपाय: हर रोज गाय को हरा चारा खिलाएं कार्य सिद्ध होंगे।

वृषभ:-

इस माह मानसिक चिंता दूर होगी, कोर्ट से संबंधित विवादों का निस्तारण होगा। रुका धन प्राप्त होने का योग है। स्वभाव में विनम्रता लाना अनिवार्य है, व्यापारिक स्थिति संतोषजनक रहेगी, प्रबल विरोधियों का शमन होगा, आलस्य, लापरवाही का त्याग करें। लोकापवाद की विशेष आशंका है, बहुमूल्य पदार्थों की खरीद बिक्री न करें नुकसान होगा। नौकरी में नए पदाधिकार का लाभ होगा, बच्चों के स्वास्थ्य की चिंता होगी। उपाय: शनि मंदिर में तेल की दीप जलाएं कार्यसिद्ध होंगे।

मिथुन:-

इस माह मान सम्मान की प्राप्ति, रोग मुक्त होंगे, इस राशि के जातकों पर लक्ष्मी जी की विशेष कृपा होगी, शत्रु पराजित होगा, साझेदारी टूटने का योग बन रहा है, पित्तजनित पीड़ा हो सकती है, किसी पुराने साथी का वियोग होगा, चोर व अग्निभय हो सकता है, मादक द्रव्यों के सेवन से स्वास्थ्य खराब होगा, बकाये धन की प्राप्ति होगी। व्यापारिक स्थिति उत्तम रहेगी, निवेश करने के लिए यह माह अनुकूल है किंतु सावधानी जरूरी है। उपाय: दुर्गा सप्तसती का नियमित पाठ करें कार्यसिद्ध होंगे।

कर्क:-

इस माह भाग्योदय का मार्ग प्रशस्त होगा, महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे, पुराने मित्रों से मदद मिलेगी, न्यायालय संबंधी विवादों का निस्तारण होने से मन प्रसन्न रहेगा। ऋण लेने की सोच रहे हैं तो सफलता मिलेगी। धन के लेन-देन में सावधानी बरते। सर्वत्र मान-सम्मान में वृद्धि होगी, उदर विकार की संभावना है, पड़ोसियों से अनबन हो सकती है, व्यापारिक स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी पेशा लोगों के लिए स्थान परिवर्तन का योग है। उपाय: मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें। कार्यसिद्ध होंगे।

सिंह:-

इस माह सामाजिक कार्यों में बाधा आएगी, लेकिन इन्हें मित्रों के सहयोग से दूर कर लेंगे। आय से ज्यादा व्यय होगा, परिवार के सदस्य की बीमारी पर खर्च होगा। जीवनसाथी से झगड़ा हो सकता है, इसलिए वादविवाद से बचने की कोशिश करें। शत्रुओं का सामना करना पड़ेगा, संकट का समाधान होगा, यात्रा से लाभ मिलेगा। वाहन आदि चलाते समय सावधानी बरतें चोट लग सकती है। किसी पुराने मित्र से मुलाकात होगी। उपाय: शनिवार को शनिचालीसा का पाठ करें कार्यसिद्ध होंगे।

कन्या:-

इस माह कार्य क्षेत्र में आपके कुशल व्यवहार से लाभ होगा, माता-पिता के स्वास्थ्य की चिंता सताएगी। इस माह आय से अधिक व्यय रहेगा, नौकरी पेशा वर्ग के लिए पदोन्नति के योग हैं। मनवाच्छित मनोकामना पूर्ण होगी, जीवनसाथी की सहमति से विशेष लाभ होगा, उदर विकार व नेत्र विकार से शरीर को कष्ट हो सकता है। शत्रुओं से सामना करना पड़ सकता है। संकटों का समाधान होगा, किसी रिश्तेदार के आने से मन प्रसन्न होगा। उपाय: शिव मंदिर में जलाभिषेक करें, कार्यसिद्ध होंगे।

तुला:-

इस माह कारोबार में तरक्की के अवसर मिलेंगे। दोस्तों और ससुराल पक्ष के साथ रिश्तें प्रगाढ़ होंगे। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होगा, भाइयों से मेल मिलाप होगा, शत्रुओं का नाश होगा, जीवनसाथी के सुख में वृद्धि होगी, रक्त विकार व नेत्र रोग से शरीर को कष्ट होगा, यात्रा से लाभ होगा। मान सम्मान में वृद्धि होगी। यह माह कारोबार में निवेश के लिहाज से अनुकूल है। पिता के स्वास्थ्य के प्रति चिंता बनी रह सकती है। उपाय: गुरुवार को गौशाला में हरे चारे का दान करें, कार्यसिद्ध होंगे।

वृश्चिक:-

इस माह कारोबार में उन्नति का योग है, सफेद वस्तुओं के व्यापार से लाभ मिलेगा, निवेश करने के लिए अनुकूल समय है। लेकिन फिजूल खर्च से बचने की कोशिश करें। धार्मिक यात्रा का प्लान बनाएंगे। सामाजिक मान सम्मान में वृद्धि होगी। घर में किसी नए मेहमान के आने से मन प्रसन्न रहेगा। स्त्री एवं संतान का सुख उत्तम रहेगा। शत्रु आपके खिलाफ कोई साजिश रच सकते हैं इसलिए विरोधियों से सावधान रहने की जरूरत है। उपाय: सोमवार को शिवालय में अभिषेक करें, कार्य सिद्ध होंगे।

धनु:-

इस मास व्यापारिक अवरोध दूर होंगे, रचनात्मक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, आर्थिक संतुलन पूर्ववत बना रहेगा, पड़ोसियों से वाद विवाद का भय है, शत्रु आपके स्वाभिमान को आघात पहुंचाने की कोशिश करेंगे। शारीरिक दुर्बलता दूर होगी, अपयश और कलंक से मुक्ति मिलेगी। संकटों का समाधान होगा, किसी रिश्तेदार के आने से मन प्रसन्न होगा। जीवनसाथी से अनबन हो सकती है। सगे संबंधियों का सहयोग मिलेगा। उपाय: शुक्रवार को मां काली के मंदिर में प्रसाद चढ़ाए, कार्यसिद्ध होंगे।

मकर:-

इस माह घर परिवार में किसी आनंद उत्सव का सुख प्राप्त होगा, चिरवांछित कार्यों में सफलता मिलेगी, स्वजनों से चला आ रहा क्लेश दूर होगा, दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी, द्रव्य लाभ होगा, इष्ट मित्रों से मुलाकात हो सकती है, आरोग्य एवं आनंद की प्राप्ति होगी। शत्रुओं की तरफ से हानि की संभावना है। जीवनसाथी के सहयोग से धार्मिक आयोजन करेंगे। छात्र वर्ग को परीक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने का संयोग बन रहा है। उपाय: रविवार को दुर्गा सप्तसती का पाठ करें, कार्यसिद्ध होंगे।

कुंभ:-

इस माह मित्र बंधुओं से सहयोग से रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, व्यापार की स्थिति में सुधार होगा, धर्म कर्म में रूचि बढ़ेगी, अथिति सत्कार, मनोरंजन और पार्टी आदि पर खर्च बढ़ेगा, अग्नि और चर भय बनेगा, यात्रा इस महीने में न करें। जीवनसाथी के साथ तालमेल बनाने की कोशिश करें। सगे संबंधियों का सहयोग मिलेगा।वाहन चलाते समय सावधानी बरतना आवश्यक है, दुर्घटना का खतरा है। उपाय: मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें, कार्यसिद्ध होंगे।

मीन:-

इस माह में कारोबार में वृद्धि होगी, आय बढ़ने के साथ खर्च भी बढ़ेगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, धन लाभ के साथ खर्च भी अधिक बना रहेगा, शत्रुओं की तरफ से हानि की सम्भावना है। शारीरिक दुर्बलता दूर होगी, आरोग्य एवं आनंद की प्राप्ति होगी। अपयश और कलंक से मुक्ति मिलेगी। संकटों का समाधान होगा, किसी रिश्तेदार के आने से मन प्रसन्न होगा। नौकरीपेशा वर्ग के लिए स्थान परिवर्तन के योग बन रहे हैं। उपाय: इस माह घर में सुंदरकांड का पाठ करें, कार्यसिद्ध होंगे।

नुपुर नृत्य कला केंद्र हल्द्वानी

में सभी के लिए 01 फरवरी 2021 से पुनः

कक्षाएं आरंभ हो गई है।

जिसमें क्लॉसिकल डांस, तबला वादन, सेमी क्लासिकल, गिटार, पेंटिंग आदि का प्रशिक्षण राज्य सरकार द्वारा निर्धारित मानकों का पालन करते हुए तथा कक्षों (क्लास) को नियमित रूप से सेनेटाइज कर आधुनिक तरीके से देने की व्यवस्था पूर्ण कर ली गई है ।

एडमिशन के लिए संपर्क करें।

www.facebook.com/nupurnrityakalakendra
You Tube: Search: nupurnrityakalakendra
nupurnritya99@gmail.com
www.nupurnritya.com

NEAR KANDPAL ENT. Hospital, SHAKTI SADAN GALI, NAWABI ROAD, HALDWANI (NAINITAL), Uttarakahnd

05946 220841, 91 9760590897
91 9411161794